जनवरी-२०२६ ◆ वर्ष १४ ◆ अंक ०१ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक
जनवरी-२०२६

सादर आमंत्रण

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव
एवं
राष्ट्र मन्दिर का भव्य लोकार्पण

22 एवं 23 फरवरी 2026

सान्निध्य

अद्भुत, अतुल्य, भारतवर्ष के गौरव

राष्ट्र मन्दिर

SILICON MUSEUM OF INDIA

के प्रस्तुतकर्त्ता

महाशय राजीव जी गुलाटी

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१५ (१७१)

भारत के सरताज

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH मसाले

सेहत के रखवाले असली मसाले सच-सच

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1250
आजीवन	1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	600 रु.	$ 125
वार्षिक	150 रु.	$ 30
एक प्रति	15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर

खाता संख्या : 310102010041518

IFSC CODE- UBIN 0531014

MICR CODE- 313026001

में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२५
पौष कृष्ण पंचमी
विक्रम संवत्
२०८२
दयानन्दाब्द
२०१

January- 2026

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

०४	वेद सुधा
११	मकर संक्रान्ति- पर्व कब, क्यों एवं कैसे ?
१७	सत्यार्थ प्रकाश गुजराती का संक्षिप्त इतिहास
१९	सत्यार्थ मित्र बने
२०	नेता जी सुभाष चन्द्र बोस
२१	समाचार
२२	बृहद् विमानशास्त्र जर्मनी कैसे पहुँचा?
२४	सत्यार्थ मित्र बनें
२५	स्वास्थ्य- प्रतिश्याय
२७	कथा सरित- कहानी दयानन्द की
३०	हलचल

स्वामी: श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १४ | अंक -०९

मुद्रण: द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001

(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159

www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

(ऊर्ध्वारोहण) उद्यानं ते पुरुष

उद्यानं ते पुरुष नावयानम्। - अथर्व ८/१/६

इस ब्रह्माण्ड में सब कुछ गतिशील है। ग्रह, नक्षत्र, वृक्ष, पशु, पक्षी, मनुष्य पृथिवी आदि सभी गति कर रहे हैं। इन सबकी यह गति चार प्रकार की हैं।

1. **ऊर्ध्वारोहण=** ऊपर की गति। अग्नि सर्वदा ऊर्ध्वगामी है। छोटे से दीपक की लौ भी सदा ऊपर को ही चलती है।
2. **अधोगमन=** जल की गति सदा नीचे की ओर ही रहती है।
3. **उभयगति=** वृक्ष ऊपर को भी चलते हैं तथा उनकी जड़ सर्वदा नीचे को ही चलती हैं। अतः वृक्ष उभयगति वाला है।
4. **अपनी जगह पर ही गति करना=** पृथिवी अपनी कीली पर ही निरन्तर गतिशील है। न ऊपर जा रही, न ही नीचे। आकाश के अन्य ग्रह भी इसी प्रकार के हैं। पशु-पक्षी भी इसी प्रकार के हैं। पक्षी आकाश में उड़ते हुए भी, सर्वत्र घूमते हुए भी ये अपने स्थान पर ही गति कर रहे हैं। स्थान का अर्थ स्वभाव जानिए। पशु-पक्षियों का जो स्वभाव-प्रकृति है, वे सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर अब तक उसी स्वभाव में घूम रहे हैं। वे न तो इससे ऊपर जा सकते तथा न ही नीचे। वे उन्नति नहीं कर सकते हैं।

मनुष्य भी उभयगतिक है। वह ऊपर को भी चल सकता है तथा नीचे को भी। अर्थात् वह उन्नति भी कर सकता है। अपनी वर्तमान दशा से ऊपर भी उठ सकता है तथा नीचे भी गिर सकता है। इसीलिए वेद सावधान करते हुए कह रहा है- **उद्यानं ते पुरुष नावयानम्।** हे पुरुष! तेरा कर्त्तव्य उत्यानम् ऊपर को उठना है, उन्नति करना है। **अवयानम् न।** नीचे को चलना, पतन के गर्त में गिरना तेरा लक्ष्य नहीं है। तू पुरुष है। पुरुष का अर्थ पौरुषयुक्त होता है। यदि तू पौरुष करे, हिम्मत करे तो तू नीचे नहीं गिर सकता, ऊपर को ही उठेगा, उन्नति ही करेगा। संसार के समस्त प्राणियों में एकमात्र मनुष्य ही ऐसा है जो उन्नति कर सकता है। पशु-पक्षियों में यह सामर्थ्य नहीं है।

उन्नति भी दो प्रकार की होती है- भौतिक तथा आध्यात्मिक। यहाँ आत्मिक उन्नति करने की ही बात कही गयी है। तथापि प्रसंगवश एक उदाहरण भौतिक उन्नति का भी देते हैं। नानजी भाई कालिदास मेहता की गणना संसार के उच्चकोटि के धनिकों में थी। बचपन में ये अति निर्धन माता-पिता की सन्तान थे। थोड़ा सा पढ़कर हलवाई की दुकान पर बर्तन मांजने लगे। नौकरी करते-करते किसी तरह अफ्रीका पहुँचकर नौकरी की खोज में एक दुकानदार से मिले। दुकानदार ने उन्हें तांबे का तार देकर कहा कि जंगल में जाकर इसे बेचकर हाथी दांत खरीद लाओ। तुम्हें कमीशन मिलेगा। अफ्रीका के जंगली लोग तांबे के तार से आभूषण बनाते थे। इस प्रकार तारों के बदले हाथी दांत लेकर इनके पास पर्याप्त धन हो गया। उस धन से वहाँ उन्होंने भूमि खरीद कर कपास बो दी। कपास की आय से और भूमि खरीद कर उसमें गन्ना बो दिया। गन्ने की आय से एक शुगर मिल लगा दी। फिर कई मील भूमि खरीद कर चाय का बाग लगा दिया तथा चाय की फैक्ट्री चालू कर दी। इस प्रकार वे धनाढ्य लोगों की गिनती में आ गए। इस सेठ ने करोड़ों रुपया दान भी दिया। सन् २०१४ में प्रधानमन्त्री बनने वाले श्री नरेन्द्रमोदी तथा पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. कलाम की कहानी भी ऐसी ही है। जो सर्व विदित है। ये उत्यान के ही प्रमाण हैं। इसके विपरीत अनेक व्यक्ति मद्य आदि व्यसनों में फंस कर पैतृक सम्पत्ति को भी नष्ट करके

कंगाल हो जाते हैं।

उन्नति की कोई सीमा नहीं है। मनुष्य ऋषि-मुनि-भगवान् तक बन सकता है। उन्नति के समान मनुष्य की अवनति, गिरने की भी कोई सीमा नहीं है। एक बार गिरना प्रारम्भ कर दिया तो गिरता ही चला जाता है। एक अंग्रेजी कहावत है- Man cannot remain stationary. He must either improve or impair. अर्थात् मनुष्य एक ही अवस्था में नहीं रह सकता। वह या तो उन्नति करेगा या अवनति करेगा। मनुष्य अपने स्वरूप में ऊर्ध्वगामी ही है। वह जन्म से ही अग्नि स्वरूप है। अग्नि ऊर्ध्वगामी ही है। मनुष्य के साथ समस्या यह है कि उसके साथ मन लगा हुआ है। मन उभयगतिक है। ऊपर भी जा सकता है तथा नीचे भी। तथापि वह संस्कारवश या स्वभाववश नीचे की ओर ही जाता है। योगदर्शन में व्यास जी ने मन की उपमा नदी से दी है।

चित्त नदी नामोभयतो वाहिनी। (योग सूत्र १-१२, व्यास भाष्य)

नदी का स्वभाव निम्नस्थान की ओर जाने का ही है। मन भी इसी प्रकार का है।

इसमें एक कारण यह भी है कि ऊर्ध्वारोहण में कष्ट है, जबकि नीचे उतरना सहज है। पहाड़ पर चढ़ने में श्रम होता है, किन्तु नीचे आने में नहीं। पक्षी भी पंखों को फड़फड़ाते हुए ही आकाश में ऊपर जाते हैं, किन्तु नीचे आते समय पंखों को केवल फैलाए रहते हैं, गतियुक्त नहीं करते। घर की छत पर जाने के लिए सीढ़ी पर चढ़ना श्रमसाध्य है, किन्तु उतरना आसान है। इसी प्रकार मन का अवयान= अव+यान नीचे की ओर जाना अति सरल तथा जल की भाँति स्वाभाविक है, जबकि उद्यान ऊपर जाना, श्रमसाध्य है। मनुष्य इस तथ्य को भूल कर मन को खुला छोड़ देता है। इसीलिए वेद सावधान करते हुए कहता है-

उद्यानं ते पुरुष नावयानम्।

हे पुरुष! हे पुरी! अर्थात् शरीर के स्वामी। तेरा लक्ष्य ऊपर उठना ही है, नीचे गिरना नहीं।

यहाँ यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि वेद यहाँ भौतिक उन्नति की बात नहीं कर रहा। अवयान शब्द ही बतला रहा है कि यहाँ आत्मिक उन्नति-अवनति की बात है। भौतिक उन्नति तो सभी करना चाहते हैं। यह व्यक्ति के स्वभाव में ही है। शरीर, व्यापार, नौकरी, पद-प्रतिष्ठा, धन आदि में सभी उन्नति ही करना चाहते हैं, करते भी हैं। कोई भी इन कार्यों में अवनति नहीं चाहता। यदि वेद को उद्यान से भौतिक उन्नति ही अभीष्ट होती तो वह अवयान नीचे जाने अवनति की बात ही न करता, क्योंकि कोई भी भौतिक अवनति नहीं चाहता। अतः स्पष्ट है यहाँ आत्मिक उन्नति ही अभिप्रेत है। मनुष्य का मन पतनशील है। वह स्वार्थवश निन्दनीय कार्यों की ओर भागता है। यह उसका अवयान-नीचे गिरना है। वेद कहता है- मानव! तू उद्यान कर। ऊपर उठ आत्मिक उन्नति कर, नीचे मत गिर। अथर्ववेद कहता है-

उत्क्रामतः पुरुष माव पत्था मृत्योः पड्बीशमवमुञ्चमानः। (अथर्ववेद ८/१/४)

हे पुरुष! तू उत्क्रमण कर, उन्नति कर, नीचे मत गिर। तू पुरुष है। पशु नहीं। तू चाहे तो मृत्यु के पदचिह्नों को भी पीछे छोड़ सकता है। वेद इस उन्नति का साधन भी बतलाता है।

उन्नति का साधन- आ हि रोहेममृतं सुखं रथमथ जीर्विर्विदथमा वदासि। (अथर्ववेद ८/१/६)

मानव! तू इस सुख देने वाले शरीर रूपी रथ पर आरोहण कर तथा उन्नति को प्राप्त कर। बस, इतना ध्यान रखना कि इस रथ को ही साध्य मत समझ लेना। यह तो तेरी उन्नति का, उद्यान का साधन मात्र है। इस साधन से अपने लक्ष्य को सिद्ध कर। बस, एक काम करना-

आरोह तमसो ज्योतिः। (ऋग्वेद ८/११/८)

मानव! तू तमस के अज्ञान से उठकर ज्योति-ज्ञान की ओर चल। तेरा कभी अवयान नहीं होगा। ज्ञान के बिना केवल कर्म में ही लगा रहेगा तो पतन भी सम्भव है। मनुष्य का उत्थान-पतन किन कार्यों से होता है, योगभाष्य में व्यास जी कहते हैं कि मन-वाणी तथा शरीर से शुभ तथा अशुभ दोनों ही प्रकार के कर्म किये जाते हैं। ये कर्म ही उसके उद्यान तथा अवयान के कारण बनते हैं। यथा-

1. **शरीर से-** हिंसा, चोरी, प्रतिषिद्ध मैथुन, परद्रव्य छीनना आदि।
2. **वाणी से-** मिथ्या, कठोर, चुगली तथा असम्बद्ध प्रलाप करना।
3. **मन से-** परद्रोह, परद्रव्य हरण की इच्छा, नास्तिकता, ईर्ष्या द्वेष। ये सभी कार्य अशुभ हैं। अतः अवयान पाप के लिए है।
1. **शरीर से-** दान, दूसरों की रक्षा।
2. **वाणी से-** सत्य हितकारी बोलना, स्वाध्याय।
3. **मन से-** दया, श्रद्धा, अमत्सर, अक्रोधादि। यह प्रवृत्ति धर्म के लिए है। जिससे उद्यान होता है।

उद्यान= आत्मोन्नति के पथिक को मन में इसके लिए संकल्प करना होगा। केवल सुनने मात्र से या इच्छामात्र से कार्य नहीं चलेगा। उसे संकल्प लेना होगा कि-

1. मैं ऐसे कार्य नहीं करूँगा जो मुझे अधोगति में धकेल दें।
2. मैं उद्यान= आत्मोन्नति के ही कार्य करूँगा।

मैं ऐसा अवश्य ही करूँगा। इस संकल्प के साथ ऐसे व्यक्ति को कुछ अन्य प्रेरक वाक्य भी स्मरण रखने चाहिए। यथा- **श्रेष्ठा भूयास्थ** (अथर्ववेद १८/४/८६) वेद कहता है- तुम श्रेष्ठ बनो। यह आदेश पशुओं के लिए नहीं है। वे ऐसा नहीं कर सकते। मनुष्य ही ऐसा कर सकता है। श्रेष्ठ बनने का संकल्प करना चाहिए। इसके पश्चात् श्रेष्ठ बनने के साधनों को अपनाना चाहिए। श्रेष्ठ पुरुषों की संगति करनी चाहिए। ऐसा करने से उद्यान ऊपर जाने का, उन्नति करने का मार्ग खुल जाएगा। इसके लिए क्या करें, वेद कहता है-

उच्च तिष्ठ महते सौभगाय। (अथर्ववेद ३/६/२)

हे मानव! तुम महान् सौभाग्य को प्राप्त करने के लिए ऊपर उठ कर खड़े हो जाओ। अर्थात् सन्नद्ध होकर प्रयास करो। बैठे मत रहो। पुरुषार्थ हीन मत बनो। आलसी मत बनो। उपनिषद् भी ऐसा ही कह रही है-

उतिष्ठत जाग्रत, प्राप्य वरान् निबोधत। (कठोपनिषद् १/३/१४)

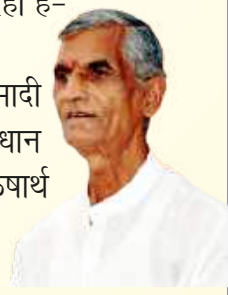

उठो, जागो तथा श्रेष्ठ विचारों को प्राप्त करके उन्हें जानो। उठने का अर्थ है- पुरुषार्थ, आलसी प्रमादी न बनना। जाग्रत का अर्थ है- सावधान होना, अपना हित-अहित सोचना। जागता हुआ= सावधान व्यक्ति कभी भी गड्ढे में नहीं गिरेगा, असावधान ही उसमें गिरेगा। इसी प्रकार सावधान होकर पुरुषार्थ करें तो अवनति होगी ही नहीं। वेद ने हमें हमारा लक्ष्य बतला दिया है। यह हम पर ही निर्भर करता है कि हम उद्यान करें या अवयान करें।

लेखक- डॉ. रघुवीर वेदालंकार
बी- २६६ सरस्वती विहार, नई दिल्ली- ११००३४

आत्म निवेदन

अज्ञादज्ञात्सम्भवसि

सन्तान सुख संसार में सबसे बड़ा सुख कहा जाता है। सम्भवतः यही कारण है कि संसार में सन्तान मोह सबसे ऊपर स्थान प्राप्त करता है। यहाँ तक कि पुत्र मोह में अनेक अनिष्ट घट जाते हैं फिर भी पुत्र मोह को छोड़ना सम्भव प्रतीत नहीं होता। महाभारत इसकी मिसाल है। जब धृतराष्ट्र के सभी पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गए होते हैं तब भी धृतराष्ट्र को सद्बुद्धि नहीं आई और उसने एक भयंकर चाल चली, भीम को मारने की। उसने ढोंग किया कि भीम को गले लगा करके सारे द्वेष और बदले की भावना को छोड़ देना चाहता है। जबकि उसका इरादा भीम को अपनी बाहों में जकड़ कर मार देने का था। श्री कृष्ण इस बात को समझ गए थे और उन्होंने भीम की एक डमी को धृतराष्ट्र की बाहों में जाने दिया। जो सन्देह था वही हुआ। धृतराष्ट्र ने जोर से जकड़ कर उस डमी को तोड़ दिया। अगर डमी के स्थान पर भीम होता तो उसका अन्त सुनिश्चित था। तो ऐसा होता है पुत्र मोह।

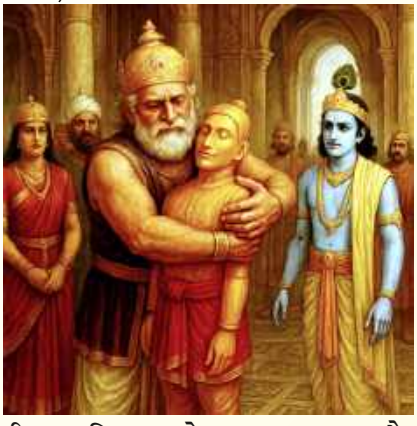

जब आचार्य द्रोण पाण्डवों के काल बने हुए थे तो श्री कृष्ण के कहने पर आवाज लगाई गई। कहा गया **अश्वत्थामा हतो नरो वा कुंजरो वा।** आचार्य द्रोण ने केवल अश्वत्थामा के मरने की बात सुनी क्योंकि आगे की बात कि यह जो अश्वत्थामा मरा है, वह मनुष्य है अथवा हाथी? यह शंख ध्वनि के शोर में दब गई। आचार्य द्रोण पुत्र वियोग की कल्पना मात्र से इतने व्यथित हुए कि उन्होंने अपने शस्त्र छोड़ दिए और धृष्टद्युम्न ने उनका सिर काट लिया। यह है एक पिता का पुत्र के प्रति मोह।

माता-पिता में भी विशेष रूप से सन्तान के लिए माँ का त्याग अवर्णनीय है। आज के युग में भी हम देखें जहाँ युवतियाँ अपने सौन्दर्य के वर्द्धन के लिए पागलपन की हद तक दीवानी हैं इसके लिए वे सब कुछ करने को

तैयार हैं। परन्तु ममत्व ऐसा आकर्षण है जो इस चाहत पर भी विजय प्राप्त कर लेता है, अपवाद छोड़ दें तो प्रत्येक महिला माँ बनना चाहती है।

जब माँ की कोख में शिशु पलता है उस माँ को अगर कोई यह बता देता है कि गर्भावस्था में फलां-फलां चीज नहीं खानी चाहिए तो सच मानिए वह चीज उस स्त्री की पसंदीदा चीजों में सबसे ऊपर होने पर भी वह उसे छूने तक से परहेज करती है। ताकि उसका शिशु अच्छी तरह पले-बढ़े और उसे कोई हानि न पहुँचे।

और पिता की बात करें तो पिता तो उसको कहता है-

अङ्गादङ्गात्सम्भवसि हृदयादधि जायसे।

आत्मासि पुत्र मामृथाः स जीव शरदः शतम्।

कि तू मेरे अंग-अंग से निकला हुआ सार है। तू मेरे (हृदयात् अधि जायसे) हृदय में से उत्पन्न हुआ है। तू मेरे ही शरीर और हृदय का टुकड़ा है। (ते प्राणम्) तेरे प्राण को (प्राणेन) अपने प्राण से (सन्दधामि) संयुक्त करता हूँ। (मे जीव) ऐ मेरे बच्चे! (यावदायुषं जीव) पूरी उमर पा; मनुष्य की पूर्ण 'शतशारदी' आयु-पर्यन्त जी। ऐ बेटे। तू मेरे दिल और जिगर का टुकड़ा है, तुझे अपनी जिन्दगी देता हूँ। ऐ मेरे बच्चे! पूरी उमर पा। तो, ऐसे भाव रखता है पिता।

निष्क्रमण संस्कार में वह कामना करता है-

ओं यददश्चन्द्रमसि कृष्णं पृथिव्या हृदय श्रितम्।

तदहं विद्वार्यस्तत् पश्यन् माहं पौत्रमघ रुदम्।।

(यद् अदः) जो यह (चन्द्रमसि) चन्द्रमा में (पृथिव्याः कृष्णं हृदयम्) पृथिवी का काला हृदय अर्थात् प्रतिबिम्ब (श्रितम्) स्थित है, (तत् अहम्) इसको मैं (विद्वान्) जानता हूँ। (तत् पश्यन्) इसको देखता हूँ। (अहं पौत्रमधं रुदं मा) मुझे पुत्रजनित किसी दुःख से रोना न पड़े। मैं पुत्र-सम्बन्धी दुःख-जनित रोना कभी न रोऊँ। पुत्र-सम्बन्धी दुःख के कारण मेरी आँखों में कभी भी (मा रुदम्) आँसू न आवें। चन्द्रमा में कालापन है। कितना भी सुखी जीवन क्यों न हो, उसमें कष्ट आते ही हैं। मैं इस बात को जानता हूँ। ईश्वर करे कि इस प्रकार के कष्ट मुझे न हों।

अर्थात् पुत्र का वियोग कभी भी ना हो ऐसी माता-पिता की कामना है। यहाँ पुत्र जनित कष्ट का एक और अर्थ भी निकलता है कि पुत्र के द्वारा भी कोई ऐसा कार्य न हो जिससे माता-पिता की अन्तरात्मा को कष्ट हो।

यह प्यार, स्नेह और आदर सम्मान वस्तुतः दोनों ओर से अपेक्षित हैं। इसी कर्तव्य की पालना हेतु पितृयज्ञ के सम्पादन का निर्देश सन्तान को शास्त्र देता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती भारतीय ऋषियों की परम्परा की अनुपालना हेतु, संस्कार सृजन हेतु सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में लिखते हैं कि बचपन से ही बालकों में ऐसे संस्कार डाल देने चाहिए जिससे वह स्वाभाविक और सहज रूप से माता-पिता की सेवा को अपना कर्तव्य समझें। वे लिखते हैं 'अपने माता-पिता और आचार्य की तन-मन-धनादि उत्तम-उत्तम पदार्थों से प्रीति पूर्वक सेवा करें।' महर्षि का कहना था कि बीच के कालखण्ड में चल पड़ी यह जो १५ दिनों में मृतक श्राद्ध की परम्परा है, यह पूर्णतः अवैदिक है। न तो दिवंगत आत्मा को भोजन की आवश्यकता होती है और न ही यहाँ दिया हुआ भोजन अन्यत्र कहीं पहुँच सकता है। इसलिए प्रतिदिन माता-पिता का श्राद्ध और तर्पण करना चाहिए। यहाँ श्राद्ध और तर्पण के सही अर्थों को समझ लें तो आशय स्पष्ट हो जाएगा। श्राद्ध उसे कहते हैं- वह कार्य जो श्रद्धापूर्वक किया जाए और तर्पण उसे कहते हैं- माता-पिता के प्रति किये जाने वाले कार्य को इस

प्रकार किया जाय कि उस कार्य को करने से माता-पिता का हृदय तृप्त हो जाए। इसीलिए प्रतिदिन माता-पिता की श्रद्धापूर्वक सेवा करके उनको तृप्त करना मनुष्य का कर्तव्य है। इसे पितृयज्ञ के नाम से जाना जाता है और इसकी गणना पंचमहायज्ञ में परिगणित है।

माता-पिता अपने सम्पूर्ण पुरुषार्थ को, साधनों को, बल्कि कहिए अपने जीवन को सन्तान के निर्माण में प्रसन्नता पूर्वक लगा देते हैं तो समय पर आने पर सन्तान का भी कर्तव्य बनता है कि जब माता-पिता अशक्त हो जाएँ तो उनकी हर प्रकार से सेवा सुश्रूसा कर सुख प्रदान करें। परन्तु आज पारिवारिक और सामाजिक वातावरण इन मर्यादाओं के प्रतिकूल दिखाई पड़ता है।

आज रामायण पाठ तो निरन्तर होते रहते हैं परन्तु राम के जीवन से सीख, आज की युवा पीढी नहीं लेती।

भगवान श्रीराम के जीवन को देखिए। कल राज्याभिषेक होने वाला है जनता उनको चाहती है। सर्वगुण सम्पन्न हैं। कोई ऐसा दोष नहीं है कि जिसके कारण उनके राज्याभिषेक को रोका जा सके। परन्तु घटनाचक्र उनको वहाँ ले जाता है कि जहाँ १४ वर्ष के लिए तापस वेश रखकर वन जाने की आज्ञा, पिता देते नहीं हैं, पिता की यह इच्छा कैकेयी उनको बताती है कि तुम्हारे पिता ऐसा चाहते हैं, इतने मात्र से श्रीराम १४ वर्ष के लिए वन को निकल पड़ते हैं। आज रामायण की कथा तो बहुत होती है परन्तु क्या राम के गुणों को अपने जीवन में उतारने का कोई प्रयास होता है? जी नहीं, आज विपरीत घटनाएँ अधिकांश में दृष्टिगोचर होती हैं।

आए दिन हम इस प्रकार की घटना पढ़ते हैं, देखते हैं, जहाँ माता-पिता बुजुर्गों के साथ क्रूरतम व्यवहार किया जाता है। दो-चार माह हुए होंगे एक वीडियो हमने देखा जिसमें एक पुत्र और पुत्रवधू मिलकर के रात के अंधेरे में लगभग ३:०० बजे बुजुर्ग माँ को एक फुटपाथ पर लिटा कर छोड़ जाते हैं। आश्चर्य, यह पैशाचिक कृत्य कहाँ घटित हुआ? रामनगरी अयोध्या में। यह वही अयोध्या है जहाँ एक पुत्र ने अपने पिता की मर्यादा के लिए राजगद्दी ठुकरा दी। आज उसी नगरी में रिश्तों की गरिमा, इंसानियत और सभ्यता सबको शर्मसार कर दिया। ऐसे दुष्कृत्य करने वाले

लोगों को क्या पुत्र की संज्ञा दी भी जा सकती है? आज इस सब पर बड़ी गम्भीरता से सोचने की आवश्यकता है। परिवार पहले ही विघटित हो रहे हैं। पति-पत्नी जो एक इकाई होती है वह भी संगठित नहीं हो पा रही है। उसके बाद इन्हीं कारणों से सन्तान उत्पन्न करने की अनिच्छा भी दंपति में दृष्टिगोचर होती है और तब जाकर के अगर ऐसी स्थितियाँ देखने में आती हैं तो ऐसे समाज को कम से कम समाज तो नहीं कहा जा सकता समज कहा जा सकता है। समज कहते हैं पशुओं के झुंड को और समाज कहते हैं मनुष्यों के समाज को। ऐसी प्रवृत्ति कभी भी मानव मन में पल्लवित नहीं हो सकती है या फिर कहीं ना कहीं हमारे परवरिश की दशा तथा दिशा गलत रास्ते जा रही है। आज हम अपने आलेख में केवल एक मुकदमे का संक्षिप्त वर्णन करेंगे। जहाँ पुत्र न्यायालय की शरण में इसलिए जाता है कि उसके माता-पिता जब मुम्बई आते हैं तो उसके घर में ना आएँ

उसके घर में प्रवेश न करें। न्यायालय माता-पिता के गृह प्रवेश पर रोक लगादे।

संक्षेप में इस मुकदमे के तथ्य हैं कि पुत्र मुम्बई में निवास करता है। उसके माता-पिता कोल्हापुर में हैं। मुम्बई में गोरेगाँव में इनका एक मकान है। माता-पिता अपना इलाज कराने जब मुम्बई आते हैं तो उस मकान में रहने चले जाते हैं। पुत्र ऐसा नहीं चाहता। निश्चित रूप से उसने माँ-बाप को मना किया होगा परन्तु माता-पिता के समक्ष और क्या चारा था? घर होते हुए भी अपना इलाज कराने के लिए वे भटकें यह तो कोई उचित बात नहीं है। इस पर उस पुत्र ने मुम्बई के सेशन न्यायालय में एक वाद प्रस्तुत किया कि न्यायालय आदेश करे कि उसके माता-पिता उस घर में प्रवेश न करने पायें। सेशन न्यायालय ने वाद को खारिज कर दिया तब पुत्र के द्वारा मुम्बई हाई कोर्ट में अपील की गई। Bombay High Court ने १४ नवम्बर २०२५ को उस अपील को खारिज कर दिया।

आदेश की सुनवाई Bombay High Court के एकल जज न्यायमूर्ति जितेन्द्र जैन ने की और उन्होंने बेटे को नाराजगी और कड़ी फटकार देते हुए कहा कि आजकल 'बच्चे माता-पिता को अदालत में ला रहे हैं' यह परवरिश में कमी का संकेत है।

अदालत ने न सिर्फ याचिका खारिज की, बल्कि बेटे/पत्नी को आदेश दिया कि जब भी माता-पिता इलाज के लिये मुम्बई आएँ, तो बेटे या उसकी पत्नी उन्हें आगमन स्थल पर स्वयं ग्रहण करें, उन्हें ठहराएँ, अस्पताल/क्लिनिक तक साथ ले जाएँ और इलाज-सम्बन्धी खर्च वह उठाएँ; अनादर या असुविधा होने पर contempt (अदालत अवमानना) का डर बताया गया।

अदालत ने यह भी रेखांकित किया कि न्यायालय ऐसे पारिवारिक दावों को वहन-योग्य नहीं मानेगा जो बुनियादी पारिवारिक दायित्वों और बुजुर्गों की रक्षा के सिद्धान्तों के विरुद्ध हों।

बेटे की ओर से यह दावा हो सकता था कि वह 'अपने मुम्बई में रहने वाले घर' पर पूर्ण स्वामित्व/उपयोग अधिकार रखता है, और माता-पिता द्वारा इलाज के हेतु आने-ठहरने एवं उस घर के उपयोग को वह अप्रिय समझ रहा था। मगर हाईकोर्ट ने यह स्पष्ट कर दिया कि चाहे बच्चे का दावा कितना भी कानूनी हो, माता-पिता की देखभाल, सम्मान एवं उनके इलाज के समय सुविधा देना उनके प्रति पुत्र की मूल जिम्मेदारी है।

हाईकोर्ट ने विश्लेषण में कहा कि बेटे का यह कदम 'ऐसे समय में माता-पिता की सेवा व सम्मान की परम्परा के विपरीत' है; न्यायमूर्ति जितेन्द्र जैन ने कहा-

"In today's age, there is something very seriously wrong in the upbringing of our children that a child is taking the parents to the Court instead of the pilgrimage."

न्यायालय के इस निर्णय का तो स्वागत है, पर मूल समस्या का निदान इससे तो नहीं हो सकता। पूर्ण समाधान तो नैतिक मूल्यों के आधान से सम्भव है जिसकी आज पूर्ण उपेक्षा हो रही है। अपने माता-पिता के साथ क्रूर व्यवहार करने वाले आज के युवाओं को समझ लेना चाहिए कि अगर ऐसा ही रहा तो आगे चलकर इनके बच्चे भी उनसे यही व्यवहार करने वाले हैं।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों में से अनेकों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रुपये 542/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफिस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।

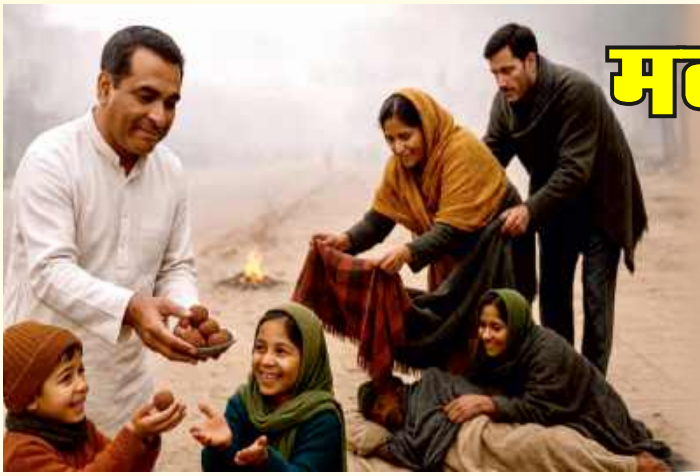

मकर संक्रान्ति

पर्व कब, क्यों एवं कैसे मनाते हैं?

भारतीय पर्वों में एक पर्व मकर संक्रान्ति पर्व है। यह शीतकाल में जनवरी महीने की १४ जनवरी को मनाया जाता है। इस दिन सूर्य वा पृथिवी मकर संक्रान्ति में प्रवेश करते हैं। इसी दिन से रात्रि की अवधि का घटना तथा दिन (सूर्योदय से सूर्यास्त) की समयावधि का बढ़ना आरम्भ होता है। मकर संक्रान्ति से दिन के समय के बढ़ने की यह प्रक्रिया निरन्तर ६ महीनों तक चलती रहती है वा विद्यमान रहती है। इन ६ महीनों की अवधि को ''देवयान'' के नाम से जाना जाता है। अतीत में यह मान्यता रही है कि देवयान में शरीर त्याग करने से आत्मा की उत्तम गति होती है। अतः हमें इस पर्व के महत्व व इसे मनाये जाने के कारण को जानना चाहिये और इसे मनाकर प्राचीन काल से चली आ रही परम्परा को सुरक्षित रखना चाहिये। मकर संक्रान्ति पर्व विषयक निम्न जानकारी उपलब्ध है।

हमारी पृथिवी सूर्य की परिक्रमा करती है। यह सूर्य की परिक्रमा में जो समय लेती है उसे ''सौर वर्ष'' कहा जाता है। पृथिवी सूर्य के चारों ओर कुछ लम्बी जिस वर्तुलाकार परिधि पर परिभ्रमण करती है, उस को ''क्रान्तिवृत्त'' कहते हैं। खगोल ज्योतिषियों द्वारा इस क्रांतिवृत्त के १२ भाग कल्पित किए हुए हैं और उन १२ भागों के नाम उन-उन स्थानों पर आकाश में नक्षत्र पुंजों से मिलकर बनी हुई कुछ मिलती-जुलती आकृति वाले पदार्थों के नाम पर रख लिये गए हैं। जैसे १. मेष, २. वृष, ३. मिथुन, ४. कर्क, ५. सिंह, ६. कन्या, ७. तुला, ८. वृश्चिक, ९. धनु, १०. मकर, ११. कुम्भ तथा १२. मीन। क्रान्ति वृत्त का यह प्रत्येक १२वां भाग वा आकृति 'राशि' कहलाती है। जब पृथिवी एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करती है तो उसको 'संक्रान्ति' कहते हैं। लोक में उपचार से पृथिवी के संक्रमण को सूर्य का संक्रमण कहने लगे हैं। छः मास तक सूर्य क्रान्तिवृत्त से उत्तर की ओर उदय होता रहता है और छः मास तक दक्षिण की ओर निकलता रहता है। प्रत्येक षड्मास की अवधि का नाम 'अयन' है। सूर्य के उत्तर की ओर उदय की अवधि को 'उत्तरायण' और दक्षिण की ओर उदय की अवधि को 'दक्षिणायन' कहते हैं। उत्तरायण-काल में सूर्य उत्तर की ओर से उदय होता हुआ दिखता है और उसमें दिन बढ़ता जाता है और रात्रि घटती जाती है। दक्षिणायन में सूर्योदय

दक्षिण की ओर होता हुआ दृष्टिगोचर होता है और उसमें रात्रि बढ़ती जाती है और दिन घटता जाता है। सूर्य की मकर राशि की संक्रान्ति से उत्तरायण और कर्क संक्रान्ति से दक्षिणायन प्रारम्भ होता है। सूर्य के प्रकाशाधिक्य के कारण उत्तरायण विशेष महत्वशाली माना जाता है अतएव उत्तरायण के आरम्भ दिवस

मकर की संक्रान्ति को भी अधिक महत्व दिया जाता है और स्मरणातीत-चिरकाल से उस पर पर्व मनाया जाता है। यद्यपि इस समय उत्तरायण परिवर्तन ठीक-ठीक मकर संक्रान्ति पर नहीं होता और अयन-चयन की गति बराबर पिछली ओर को होते रहने के कारण संवत् १९९४ विक्रमी में मकर-संक्रान्ति से २२ दिन पूर्व धनु राशि के ७ अंश २४ कला पर ''उत्तरायण'' होता है। इस परिवर्तन को लगभग १३५० वर्ष लगे हैं परन्तु पर्व मकर संक्रान्ति के दिन ही होता चला आता है। इससे सर्वसाधारण जनों को जो 'मकर-संक्रान्ति' पर पर्व मानते हैं ज्योतिष-शास्त्र से अनभिज्ञता का कुछ परिचय मिलता है, किन्तु शायद पर्व का चलते न रहना अनुचित मानकर मकर-संक्रान्ति के दिन ही उत्तरायण या देवयान पर्व मनाने की रीति चली आती हो।

मकर संक्रान्ति पर्व क्यों मनाया जाता है, इसका कारण इस दिन आकाश में घट रही घटना को स्मरण रखना व उसको जानने का भाव प्रतीत होता है। मकर संक्रान्ति को मनाने की विधि हमारे पूर्वजों ने ऋतु को ध्यान में रखकर बनाई है। मकर-संक्रान्ति के अवसर पर शीत अपने यौवन पर होता है। जनावासों सहित जगंल, वन, पर्वत सर्वत्र शीत का आतंक छा रहा है, चराचर जगत् शीतराज का लोहा मान रहा है, हाथ-पैर जाड़े से सिकुड़ जाते हैं, **'रात्रौ जानु दिवा भानुः'** रात्रि मे जंघा और दिन में सूर्य, किसी कवि की यह उक्ति दोनों पर आजकल ही पूर्णरूप से चरितार्थ होती है। दिन की अब तक यह अवस्था थी कि सूर्यदेव उदय होते ही अस्तांचल के गमन की तैयारियाँ आरम्भ कर देते थे, मानो दिन रात्रि में लीन ही हुआ जाता था। रात्रि सुरसा राक्षसी के समान अपनी देह बढ़ाती ही चली आती थी। अन्त को उस का भी अन्त आया। मकर संक्रान्ति के दिन मकर ने उसको निगलना आरम्भ कर दिया होता है। इस दिन सूर्य देव ने उत्तरायण में प्रवेश किया होता है। इस काल की महिमा संस्कृत साहित्य में वेद से लेकर आधुनिक ग्रन्थों पर्यन्त सविशेष वर्णन की गई है। वैदिक ग्रन्थों में उस को 'देवयान' कहा गया है और ज्ञानी लोग स्वशरीर त्याग तक की अभिलाषा इसी उत्तरायण में रखते हैं। उनके विचारानुसार इस समय देह त्यागने से उन की आत्मा सूर्य लोक में होकर प्रकाश मार्ग से प्रयाण करेगी।

आजीवन ब्रह्मचारी रहे भीष्म पितामह ने इसी उत्तरायण के आगमन तक शर-शय्या पर शयन करते हुए प्राणों के उत्क्रमण की प्रतीक्षा की थी। ऐसा प्रशस्त समय किसी पर्व के बनने से कैसे वंचित रह सकता था।

आर्यजाति के प्राचीन नेताओं ने मकर-संक्रान्ति (सूर्य की उत्तरायण संक्रमण तिथि) का पर्व निर्धारित कर दिया। यह मकर संक्रान्ति का पर्व चिरकाल से चला आ रहा है। यह पर्व भारत के प्रायः सभी प्रान्तों में प्रचलित है। इसे एक देशी पर्व न कहकर सर्वदेशी पर्व कहा जा सकता है। सब प्रान्तों में इसे मनाने की परिपाटी में भी समानता पाई जाती है। सर्वत्र शीतातिशय निवारण के उपचार प्रचलित हैं।

वैद्यक शास्त्र में शीत के प्रतिकार तिल, तेल तथा तूल (रूई) बताए गए हैं। इन तीनों में तिल सबसे मुख्य है। इसलिए पुराणों में पर्व के सब कृत्यों में तिलों के प्रयोग का विशेष महात्म्य गाया गया है। वहाँ तिल को पापनाशक कहा गया है। शीत ऋतु में शीत से होने वाले दुःखों के निवारण में कुछ सीमा तक तिल का महत्व है। अतः इसे पाप व दुःखनाशक कहना उचित ही है। किसी पुराण का प्रसिद्ध श्लोक है:

'तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिलहोमी तिलोदकी।
तिलभुक् तिलदाता च षट्तिलाः पापनाशनाः॥'

इसका अर्थ है तिल मिश्रित जल से स्नान, तिल का उबटन, तिल का हवन, तिल का जल, तिल का भोजन

और तिल का दान ये छः तिल के प्रयोग पाप वा दुःखनाशक हैं।

मकर-संक्रान्ति के दिन भारत के सब प्रान्तों में तिल और गुड़ या खांड के लड्डू बना-बनाकर, जिन को 'तिलवे' कहते हैं, दान किये जाते हैं और इष्ट-मित्रों में बाँटे जाते हैं। महाराष्ट्र राज्य में इस दिन तिलों का 'तीलगूल' नामक हलवा बाँटने की प्रथा है। सौभाग्यवती स्त्रियाँ तथा कन्यायें इस दिन अपनी सहेलियों से मिलकर उन को हल्दी, रोली, तिल और गुड़ भेंट करती हैं। प्राचीन ग्रीक लोग भी वधू-वर की सन्तान वृद्धि के निमित्त तिलों का पक्वान्न बाँटते थे। इस से ज्ञात होता है कि तिलों का प्रयोग प्राचीनकाल में विशेष गुणकारक माना जाता रहा है। प्राचीन रोमन लोगों में मकर-संक्रान्ति के दिन अपने इष्ट मित्रों को अंजीर, खजूर और शहद भेंट देने की रीति प्रचलित थी। यह भी मकर संक्रान्ति पर्व की सार्वजनिकता और प्राचीनता का परिचायक है।

मकर संक्रान्ति पर्व पर दीन-दुःखियों को शीत निवारणार्थ कम्बल और घृत आदि दान करने की प्रथा सनातनी बन्धुओं में प्रचलित है। **'कम्बलवन्तं न बाधते शीतम्'** की श्लिष्ट उक्ति संस्कृत में प्रसिद्ध है। घृत को भी वैद्यक में ओज और तेज को बढ़ाने वाला तथा उदर-अग्निदीपक कहा गया है। आर्य पर्वों पर दान करना अवश्यमेव ही कर्तव्य होता है। गीता में भी देश, काल और पात्र का विचार कर दान देने को सात्विक दान कहा गया है। तिल के लड्डू व अन्य मिष्ठान्न पदार्थ बनाकर तथा इस दिन पात्रों को दान करके इस पर्व को मनाया जाना चाहिये। इस पर्व को मनाने की पद्धति श्री पं. भवानी प्रसाद जी लिखित पुस्तक 'आर्य पर्व पद्धति' में दी गई है। इस दिन वायु-जल शोधक एवं आध्यात्मिक लाभों से युक्त अग्निहोत्र यज्ञ-परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर किया जाना चाहिये। उस यज्ञ में पुस्तक में दिए गये मन्त्रों से विशेष आहुतियाँ दी जानी चाहिए। हवन सामग्री में तिलों एवं शुद्ध घृत की पर्याप्त मात्रा होनी चाहिये। यज्ञ के बाद तिल के लड्डू (तिलवे) होम यज्ञ में समागत-पुरुषों को हुतशेष के रूप में समर्पण किये जाने चाहिये। अपनी सामर्थ्यानुसार कम्बल व अन्य शीतनिवारक वस्त्र निर्धन व दीन-दुखी बन्धुओं को वितरित करने का प्रयत्न भी सबको करना चाहिये। हमने इस लेख की सामग्री को पं. भवानी प्रसाद जी की पुस्तक आर्य पर्व पद्धति से लिया है। उनको सादर नमन एवं धन्यवाद करते हैं। हम आशा करते हैं कि पाठक इस लेख की जानकारी से लाभान्वित होंगे। सब इस पर्व को अवश्य मनायेंगे जिससे यह प्राचीन परम्परा बन्द न हो, सदा चलती रहे और धर्म प्रेमी आर्य जनता को इस दिन के महत्व को जानने का अवसर मिलने सहित हम सब इस दिन यज्ञ, स्वाध्याय तथा मिष्ठान्न का सेवन कर आनन्दित हो होते रहें।

- मनमोहन कुमार आर्य
१९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून (उत्तराखण्ड)

दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी–बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

G Pay

BHIM UPI

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु. 51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

वन्दे मातरम्

आनन्द मठ से स्वतंत्र भारत तक
'राष्ट्रीय चेतना का उदय और राजनीतिक संकुचन का इतिहास'

वह कोई साधारण भोर नहीं थी। चिरप्रतीक्षित भोर। कल जो पराधीन भारत में निद्रा देवी की गोद में गए थे, आज उनकी आँख स्वतन्त्र भारत में खुलीं। भारत का स्वतंत्रता दिवस, १५ अगस्त १९४७, उस ऐतिहासिक सुबह जब देश पहली बार स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में जागा, तब आकाशवाणी से जो स्वर गूँजा, वह केवल संगीत नहीं था, वह भारत की आत्मा की उद्घोषणा थी। वह नमन था, भारत माता का, वन्दना थी, भारत माँ की जिसको गुलामी की जंजीरों से उसके रणबांकुरे बेटों ने स्वतन्त्र किया था। इस दिव्य अनुभूति के स्वर के साधक थे पण्डित ओंकारनाथ ठाकुर, तो शब्द साधना बंकिम बाबू की थी।

इन दोनों के संगम ने देशवासियों के हृदयों को स्पर्श कर स्पंदित कर दिया। मानो पूरे देश में वन्दे मातरम् गूँज उठा। देश रोमांचित हो गया और ये संगीतमय पल भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में अमर हो गए। यह केवल संगीत नहीं था 'यह दो सौ वर्षों की गुलामी के बाद मुक्त हुई आत्मा की पुकार थी।' यह पहली बार था जब वन्दे मातरम् किसी शासित राष्ट्र के गीत की तरह नहीं, बल्कि स्वतंत्र राष्ट्र की चेतना के रूप में गूँजा।

पं. ओंकारनाथ ठाकुर (१८९७-१९६७) भारतीय शास्त्रीय संगीत के महानतम गायकों में गिने जाते हैं। वे ग्वालियर घराने के मूर्धन्य साधक थे और अपनी विलक्षण स्वर-साधना, गहन भावाभिव्यक्ति और राष्ट्रप्रेमपूर्ण चेतना के लिए प्रसिद्ध थे। इटली के डिक्टेटर मुसोलिनी को जब उन्होंने अपने राग के सम्मोहन में बाँध कर महीनों पुराने अनिद्रा रोग का शमन कर दिया तो मुसोलिनी पंडित जी के लिए कुछ भी करने को आतुर था। परन्तु ये हमारे वे पूर्वज थे जिनके लिए देश से बढ़ाकर कुछ नहीं था। वन्देमातरम् के गायन के सन्दर्भ में यह अंकित कर देना अत्यन्त आवश्यक है कि सरदार पटेल ने जब स्वतंत्रता दिवस पर वन्देमातरम् गाने का प्रस्ताव ठाकुर ओंकारनाथ को दिया तो ठाकुर ओंकारनाथ ने शर्त लगा दी कि वे अखण्डित वन्देमातरम् ही गायेंगे खण्डित नहीं। जब उनकी यह शर्त मानी गयी तभी उन्होंने १५ अगस्त प्रातः ६.३० पर अपने मनमोहक

स्वर में सम्पूर्ण वन्देमातरम् गाया जो आज भारतीय इतिहास का हिस्सा बन गया है। अतः वन्देमातरम् की बात करते हुए यदि हम इस महान् व्यक्ति की चर्चा नहीं करते तो कुछ अधूरापन रह जाता।

१८८२ ई. में बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने अपना प्रसिद्ध उपन्यास "आनंद मठ" लिखा। इसी उपन्यास में पहली बार "वन्दे मातरम्" पूर्ण काव्य के रूप में प्रकट हुआ। बंकिम स्वयं ब्रिटिश शासन में उच्च सरकारी अधिकारी थे, पर उनका साहित्य भारतीय आत्मबोध और स्वाधीनता की चेतना से ओतप्रोत था।

वेद कहता है- **'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'** अर्थात् यह भूमि हमारी माता है और हम इसके पुत्र हैं। क्योंकि मातृभूमि हमारा पालन-पोषण माँ के समान ही करती है। इसीलिए महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास में लिखते हैं- 'हम और आप को अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें।'

उसी प्रकार वन्दे मातरम् पहली बार भारत को "भू-राजनीतिक इकाई" नहीं, बल्कि "जाग्रत मातृशक्ति" के रूप में स्थापित करता है। १९०५ में बंग-भंग आन्दोलन (Partition of Bengal) हुआ। इसी समय वन्दे मातरम् पहली बार साहित्य से निकलकर जन-आन्दोलन का युद्धघोष बना। धीरे-धीरे वन्दे मातरम् पूरे भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन की धुरी बन गया। यह केवल गीत नहीं रहा 'यह स्वराज का संकल्प-मंत्र बन गया।'

१९०५ से १९२० के बीच अनुशीलन समिति, युगान्तर दल, गदर पार्टी, हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन इन सभी आन्दोलनों में वन्दे मातरम् शपथ-वाक्य की तरह प्रयुक्त हुआ। जलियांवाला बाग, चटगाँव विद्रोह, काकोरी कांड- हर जगह यही उद्घोष सुनाई देता है। यह वह चरण था जब वन्दे मातरम् सर्वोच्य राष्ट्रीय प्रतीक बन चुका था।

१९३७ में राष्ट्रीय भावों को मत जन्य संकीर्णता से दबाने का सफल प्रयास हुआ। मुस्लिम लीग ने आपत्ति उठाई कि "वन्दे मातरम् के बाद के पदों में देवी-पूजा और दुर्गा का वर्णन है, जो इस्लाम के एकेश्वरवाद से मेल नहीं खाता। इसके परिणाम स्वरूप कांग्रेस ने एक समिति बनायी। यह निर्णय हुआ कि केवल पहले दो पद ही सार्वजनिक रूप से गाए जाएँगे शेष पदों को विवादास्पद मानकर हाशिये पर डाल दिया गया। यह पहली बार था जब राष्ट्रगीत को राजनीतिक समझौते का विषय बनाया गया।

इतिहास की दृष्टि से यह निर्णय राष्ट्रीय चेतना के सांस्कृतिक स्वरूप को मतजन्य राजनीतिक दबाव में सीमित करने की शुरुआत था। इसके पीछे स्पष्ट रूप से जो कारण नजर आ रहे थे वे थे धार्मिक तटस्थता की राजनीतिक व्याख्या और अल्पसंख्यक तुष्टिकरण की नीति।

यह एक ऐतिहासिक विडम्बना है कि- जिस गीत पर हजारों लोगों ने जेलें काटीं, जिस पर लाठियाँ और गोलियाँ चलीं, जिसे गाते हुए क्रान्तिकारी फाँसी के फंदे पर चढ़े उसी गीत को आजाद भारत में "दो पदों में कैद" कर दिया गया। जबकि विद्वानों का मानना है कि साहित्य, दर्शन और राष्ट्रबोध- तीनों की दृष्टि से वन्दे मातरम् का पूर्ण सौंदर्य उसके तीसरे से छठे पदों में ही अपने चरम पर पहुँचता है।

वस्तुतः वन्दे मातरम् किसी पूजा-पद्धति का गीत नहीं, यह राष्ट्र की सृजनात्मक शक्ति का प्रतीकात्मक रूपक है। दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती यहाँ धार्मिक देवियाँ नहीं, बल्कि शक्ति-समृद्धि-ज्ञान की राष्ट्रीय अवधारणाएँ हैं।

धन्यवाद, माननीय प्रधान मंत्री जी को है कि वन्दे मातरम के १५० वर्ष मनाने के रूप में, सरकारी मंचों तक सीमित रह गए इस पवित्र राष्ट्रीय गीत को पुनः जन-जन तक पहुँचा दिया है। अपने आलेख का समापन हम प्रधानमंत्री जी द्वारा इस पवित्र अवसर

पर संसद में दिए गए हृदय स्पर्शी वक्तव्य के कुछ अंशों को उद्धृत करके कर रहे हैं-

"वन्दे मातरम् वह मंत्र है जिसने हमारे स्वतंत्रता संग्राम को ऊर्जा व आत्मविश्वास दिया।"

"हम यहाँ इसलिए बैठे हैं, क्योंकि लाखों-करोड़ों ने वन्दे मातरम् का जाप किया, उसके लिए कुर्बान हुए, और आज हमें स्वतंत्रता दिलाई।"

"१८७५ में जब वन्दे मातरम् लिखा गया, तब ब्रिटिश साम्राज्य पूरी ताक़त से भारतियों को 'गॉड सेव द क्वीन' सुनाने की कोशिश में था- लेकिन वन्दे मातरम् ने उस शत्रु स्वर को चुनौती दी। आज, १५० साल बाद, हमें उसकी शान फिर से स्थापित करने का अवसर मिला है।"

लेखक- अशोक आर्य
अध्यक्ष- नवलखा महल, उदयपुर

वन्दे मातरम् सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम् शस्यशामलां मातरम्। वन्दे मातरम्।
शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनीं फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीं,
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीं सुखदां वरदां मातरम्।।1।।वन्दे मातरम्।
कोटि-कोटि-कण्ठ-कल-कल-निनाद-कराले,
कोटि-कोटि-भुजैर्धृत-खरकरवाले, अबला केन मा एत बले।
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीं रिपुदलवारिणीं मातरम्।।2।।वन्दे मातरम्।
तुमि विद्या, तुमि धर्म तुमि हृदि, तुमि मर्म त्वं हि प्राणाः,
शरीरे बाहुते तुमि मा शक्ति, हृदये तुमि मा भक्ति।
तोमारई प्रतिमा गडि मन्दिरे-मन्दिरे मातरम्।।3।।वन्दे मातरम्।
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम् नमामि।
कमलां अमलां अतुलां सुजलां सुफलां मातरम्।।४।।वन्दे मातरम्।
श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषितां धरणीं भरणीं मातरम्।।५।।वन्दे मातरम्।।

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

पाठकों के पास 'सत्यार्थ सौरभ' डाक विभाग की अव्यवस्था के कारण अनेक बार समय पर नहीं पहुँच पाती है। पाठक न्यास को ही दोषी मानते हैं, जिसे अनुचित भी नहीं कहा जा सकता। परन्तु वास्तविकता है कि यहाँ से प्रत्येक माह की 7 तारीख को पत्रिका प्रेषित कर दी जाती है। पश्चात् सब कुछ डाक विभाग की कृपा पर निर्भर करता है। फिर भी आपसे निवेदन है कि प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें। -सम्पादक

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास | **भवानीदास आर्य**, मंत्री-न्यास | **डॉ. अमृत लाल तापड़िया**, संयुक्तमंत्री-न्यास

सत्यार्थ प्रकाश के 2010 ई. तक प्रकाशित गुजराती अनुवाद का संक्षिप्त इतिहास

१. सत्यार्थ प्रकाश का सर्वप्रथम गुजराती अनुवाद संवत् १९६१ (१९०४ ई.) में वैदिक यन्त्रालय, अजमेर की प्रबंधकर्त्री सभा द्वारा प्रकाशित हुआ था। केवल १,००० प्रतियाँ छपी थीं। इसके अनुवादक पंडित मंछाशंकर जयशंकर द्विवेदी थे, जो स्वामी दयानन्द के समकालीन, मुम्बई में स्थापित विश्व के प्रथम आर्यसमाज के सदस्य तथा बाद में उसके मंत्री भी रहे। उन्होंने स्वामी दयानन्द को मुम्बई में ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का लेखन करते हुए प्रत्यक्ष देखा था। पंडित मंछाशंकर ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का भी गुजराती अनुवाद किया था, जिसके आरम्भ में उन्होंने यह उल्लेख किया कि 'स्वामी जी जब इस (मुम्बई) नगर में थे, तब वे ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका को स्वयं अपने हस्त से लिखते थे और उनके वैतनिक पंडित उसकी प्रतिलिपि तैयार करते थे। स्वामी जी के पास जाने वाले सभी को यह दृश्य स्पष्ट दिखाई देता था, और मैं भी उन्हीं प्रत्यक्ष दर्शकों में से एक था।' सत्यार्थ प्रकाश का उनका अनुवाद प्रायः शब्दशः, प्रामाणिक और आज भी स्वीकृत माना जाता है, यद्यपि १२० वर्षों में गुजराती भाषा की शैली में आए परिवर्तनों के कारण इसकी भाषा कहीं-कहीं कठिन प्रतीत होती है। वर्तमान में भी यही अनुवाद प्रकाशित हो रहा है।

२. इसके बाद दूसरा संस्करण संवत् १९७१-१९१५ ई. में मुम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा से ३,००० प्रतियों में प्रकाशित हुआ। इसमें अनुवाद पंडित मयाशंकर शर्मा द्वारा किया गया था, जो पंडित बालकृष्ण शर्मा के शिष्य और प्रतिष्ठित आर्य विद्वान् थे। उन्होंने छह दर्शनों के गुजराती भाष्य तथा संस्कारविधि, गोकरुणानिधि आदि का भी अनुवाद किया। उनका सत्यार्थ प्रकाश अनुवाद भाषा की दृष्टि से अधिक सरल था, पर शब्दशः नहीं; इसमें कुछ स्थानों पर भावानुवाद तथा स्वयं रचित वाक्य भी सम्मिलित थे।

३. तीसरा संस्करण पंडित मयाशंकर कृत अनुवाद का था, जिसे मुम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा की अनुमति से महर्षि दयानन्द जन्मशताब्दी समिति के मंत्री पंडित विजयशंकर मूलशंकर

जानी, रतिलाल हरजीवन पटेल और हरगोविन्द धरमशी काचवाला ने अपनी ओर से २२ जनवरी १९२६ को ३,००० प्रतियों में प्रकाशित किया।

४. इसी के साथ-साथ चौथा संस्करण भी रतिलाल हरजीवन पटेल द्वारा १,००० प्रतियों में प्रकाशित किया गया।

५. पाँचवाँ संस्करण शेठ शूरजी वल्लभदास, मुम्बई द्वारा संवत् १९८५-१९२८ ई. में ५,००० प्रतियों में प्रकाशित हुआ। पंडित मयाशंकर शास्त्री कृत अनुवाद ही इसमें प्रयुक्त हुआ।

६. छठा संस्करण मुम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा ने संवत् १९९५-१९३८ ई. में २०,००० प्रतियों में निकाला। इसमें भाषा-सुधार के नाम पर कुछ परिवर्तन किए गए थे तथा कागज सामान्य गुणवत्ता का था।

७. इसी वर्ष उनका सातवाँ संस्करण मुम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा ही उत्तम कागज पर प्रकाशित हुआ। १,००० प्रतियाँ।

८. अष्टम संस्करण बलदेव भाई आर्य, मंत्री- चरोतर प्रदेश आर्यसमाज, आणंद द्वारा १९४८ ई. में २,००० प्रतियों में प्रकाशित किया गया।

९. इसके बाद नवम संस्करण आचार्य- गुरुकुल सूपा द्वारा संवत् २००९-१९५३ ई. में ९,००० प्रतियों में प्रकाशित हुआ, जिसमें प्रत्येक समुल्लास के विषय-शीर्षक और भाषा में अनेक परिवर्तन थे। कुछ अंग्रेजी शब्द भी पर्याय के रूप में जोड़े गए एवं मुद्रण दोष अत्यधिक थे। प्रोफेसर दयाल परमार (बाद में पद्मश्री दयाल मुनि वानप्रस्थ, टंकारा) ने इस संस्करण पर अत्यन्त निराशा व्यक्त की है।

१०. दशम संस्करण आर्य सेवा संघ, सूरत द्वारा १९७२ ई. में २,३०० प्रतियों में प्रकाशित हुआ, जिसमें प्रायः नवम संस्करण का ही अनुसरण किया गया।

११. ग्यारहवाँ संस्करण आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, अहमदाबाद द्वारा संवत् २०३२-१९७५ ई. में १०,००० प्रतियों में प्रकाशित हुआ और इसमें भी नवम संस्करण का ही अनुसरण था।

१२. बारहवाँ संस्करण चरोतर प्रदेश आर्यसमाज, आणंद द्वारा १९७६ ई. में डॉ. दिलीप वेदालंकार के सम्पादन में ५,००० प्रतियों में प्रकाशित हुआ। इसमें छठे और नवम संस्करणों का अनुसरण किया गया था। दयाल मुनि ने इस संस्करण पर भी असंतोष व्यक्त किया, विशेषकर इस बात पर कि सम्पादक ने स्वामी वेदानन्द तीर्थ की टिप्पणियों को अपने नाम से प्रस्तुत कर दिया।

१३. तेरहवाँ संस्करण आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, अहमदाबाद द्वारा १९८४ ई. में १०,००० प्रतियों में प्रकाशित किया गया। यह बारहवें संस्करण की ही नकल थी। दयाल मुनि ने पंडित मयाशंकर कृत अनुवाद का मूल ग्रन्थ से मिलान कर परिश्रमपूर्वक संशोधन किया था, परन्तु गुजरात की सभा के तत्कालीन अधिकारियों ने इस परिश्रम का उपयोग न करते हुए साहित्यकार नरेन्द्र दवे के मार्गदर्शन में इसे प्रकाशित किया, जिस पर दयाल मुनि ने अप्रसन्नता व्यक्त की।

१४. चौदहवाँ संस्करण चरोतर प्रदेश आर्यसमाज, आणंद द्वारा १९९४ ई. में ५,००० प्रतियों में प्रकाशित हुआ। इस समय तक पंडित मंछाशंकर कृत प्रथम संस्करण की प्रति दयाल मुनि को मिल चुकी थी। इसलिए उन्होंने अत्यन्त दक्षता से सम्पादन कर ९० वर्षों बाद उसी मूल गुजराती अनुवाद को पुनः प्रकाशित करवाया। इसमें अहमदाबाद निवासी डॉ. कमलेश कुमार शास्त्री का विशेष योगदान था। ग्रन्थ के चौदहवें समुल्लास को अब तक सभी गुजराती संस्करणों में हिन्दी में ही छापा जाता था, क्योंकि उसमें अरबी-फारसी शब्दों की अधिकता के कारण

इसका अनुवाद कठिन माना जाता था; परन्तु डॉ. कमलेश कुमार शास्त्री ने इस समुल्लास को प्रथम बार गुजराती में अनुदित किया जिसे इस संस्करण में प्रथम बार प्रकाशित किया गया।

१५. पंद्रहवाँ संस्करण प्रकाशवीर आर. भोजक, अहमदाबाद द्वारा १९९७ ई. में ३,००० प्रतियों में प्रकाशित हुआ। इसमें चौदहवें संस्करण का अनुसरण किया गया; परन्तु यह एक व्यावसायिक प्रकाशन होने से संतोषजनक नहीं था। इसमें अनुवादक का नाम भूलवश पंडित मंछाशंकर के स्थान पर पंडित मयाशंकर छप गया, जिस पर दयाल मुनि ने असंतोष व्यक्त किया।

१६. सोलहवाँ संस्करण प्रकाशवीर आर. भोजक द्वारा संवत् २०५८-१९९८ ई. में १,५०० प्रतियों में पुनः प्रकाशित हुआ, जिसमें कोई विशेष सुधार नहीं था।

१७. सत्रहवाँ संस्करण आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, अहमदाबाद द्वारा संवत् २०५४ में ५,००० प्रतियों में प्रकाशित हुआ।

१८. अठारहवाँ संस्करण भी उसी आर्य समाज द्वारा संवत् २०५६ में ५,००० प्रतियों में प्रकाशित हुआ।

१९. उन्नीसवाँ संस्करण दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ द्वारा संवत् २०५६-२००० ई. में ५,००० प्रतियों में प्रकाशित हुआ और यह बहुत शुद्ध रूप में छपा। इसके निर्माण में दयाल मुनि को आचार्य ज्ञानेश्वर, डॉ. कमलेश कुमार शास्त्री, ब्रह्मचारी दिनेश कुमार, नलिनभाई आदि का सहयोग प्राप्त था।

२०. बीसवाँ संस्करण पुनः दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ द्वारा संवत् २०५७-२००१ ई. में ५,००० प्रतियों में प्रकाशित किया गया, जिसमें उन्नीसवें संस्करण की मुद्रण सम्बन्धी त्रुटियाँ सुधार दी गईं।

२१. इक्कीसवाँ संस्करण आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, अहमदाबाद द्वारा संवत् २०५८ में ५,००० प्रतियों में सत्रहवें संस्करण के अनुसार छापा गया।

२२. बाईसवाँ संस्करण वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़ द्वारा संवत् २०६४-२००७ ई. में ५,००० प्रतियों में प्रकाशित हुआ, जिसमें अनुवादक की प्रस्तावना, प्रकटकर्त्ता की विज्ञप्ति एवं अब तक के संस्करणों की दुर्लभ जानकारी भी सम्मिलित की गई।

२३. तेईसवाँ संस्करण बृहद सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा, राजकोट द्वारा संवत् २०६७-२०१० ई. में ५,००० प्रतियों में प्रकाशित हुआ।

अब तक (२०१० ई. तक) कुल १,१६,८०० गुजराती सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशित हो चुके हैं। अर्थात् औसतन प्रतिवर्ष लगभग १,१०० प्रतियाँ! वर्तमान में गुजरात की आबादी ७.३५ करोड़ है।

२०१० के बाद जामनगर आर्यसमाज, अहमदाबाद आर्यसमाज और वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़ द्वारा भी पंडित मंछाशंकर कृत अनुवाद के लगभग ४-५ नवीन संस्करण प्रकाशित हुए होंगे, परन्तु अभी मेरे पास उनकी ठोस प्रकाशन-जानकारी उपलब्ध नहीं है। इसलिए गुजरात के सभी मित्रों से निवेदन है कि यदि आपके पास २०१० के बाद के इन संस्करणों का विवरण उपलब्ध हो, तो कृपया उसे साझा करें ताकि इस इतिहास को नवीनतम रूप दिया जा सके।

पिछले वर्षों में दयाल मुनि जी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता था, इसलिए उन्होंने गुजराती सत्यार्थ प्रकाश के संस्करण-इतिहास पर आधारित अपना एक हस्तलिखित गुजराती विवरण 'सत्यार्थ प्रकाश सिंहावलोकन' मुझे यह कहते हुए भेजा था कि भविष्य में इसका सदुपयोग किया जा सके। उसी के आधार पर यह संक्षिप्त हिन्दी लेख तैयार किया गया है। आशा है ये जानकारियाँ भविष्य के शोधकर्त्ताओं और पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी।

प्रस्तुति- भावेश मेरजा, बड़ौदा

नेताजी की जयन्ती पर विशेष

नेता जी सुभाष चन्द्र बोस

हर वर्ष २३ जनवरी का दिन हमें भारत के एक ऐसे महान् सपूत की याद दिलाता है, जिसने 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' का नारा देकर लाखों युवाओं के दिलों में क्रान्ति की आग जला दी थी। हम बात कर रहे हैं नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की। उनका जीवन त्याग, साहस और देश प्रेम की एक ऐसी कहानी है, जो आज भी हमें प्रेरित करती है। उनकी जयन्ती का दिन आजादी के लिए किए गए उनके संघर्ष को याद करने का दिन है। सुभाष चन्द्र बोस का जन्म २३ जनवरी १८९७ को ओडिशा के कटक शहर में हुआ था। उनके पिता जानकीनाथ बोस एक मशहूर वकील थे। बचपन से ही सुभाष बहुत होशियार और एक अलग तरह के विचार रखने वाले थे। अपनी उच्च शिक्षा और पिता की इच्छा पूरी करने के लिए, वह इंग्लैंड गए और वहाँ कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में दाखिला लिया। यह वह जगह थी जहाँ उन्होंने एक समय दुनिया की सबसे मुश्किल परीक्षाओं में से एक, इण्डियन सिविल सर्विसेज (ICS) की तैयारी की। उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता और मेहनत से इस परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त कर एक बड़ी उपलब्धि हासिल की थी। यह उस समय हर भारतीय के लिए गर्व की बात थी। लेकिन नेताजी का लक्ष्य सरकारी नौकरी करना नहीं था। उनका दिल तो देश की आजादी के लिए धड़कता था। उन्होंने इस ऊँची नौकरी को ठुकरा दिया और भारत लौटकर आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। यह उनका पहला बड़ा कदम था, जिसने साबित कर दिया कि देश सेवा उनके लिए सबसे पहले थी। भारत लौटने के बाद, नेताजी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गए। वह जल्दी ही एक बड़े नेता के रूप में उभरे। उन्होंने महात्मा गाँधी और चितरंजन दास जैसे बड़े नेताओं के साथ काम किया। लेकिन नेताजी का मानना था कि सिर्फ शान्तिपूर्ण तरीके से आजादी मिलना मुश्किल है, अंग्रेजों को देश से निकालने के लिए एक सशक्त और तेज तरीका अपनाना होगा। उनके विचारों में आग थी और उनकी रणनीति स्पष्ट थी। यही कारण था कि उन्हें जल्द ही कांग्रेस का अध्यक्ष भी चुना गया। लेकिन उनके तेज विचारों के कारण, उन्हें कांग्रेस छोड़नी पड़ी और उन्होंने अपना अलग रास्ता चुना। द्वितीय विश्व युद्ध (World War II) के समय, नेताजी ने एक बड़ा फैसला लिया। उन्होंने सोचा कि यह अंग्रेजों की कमजोरी का फायदा उठाने का सही समय है। अंग्रेज उन्हें नजरबन्द (घर में कैद) करके रखे हुए थे, लेकिन जनवरी १९४१ में, वह एक योजना बनाकर, भेष बदलकर, भारत से भाग निकले। यह किसी जासूसी फिल्म की कहानी जैसा था वह अफगानिस्तान, रूस होते हुए जर्मनी और फिर सिंगापुर पहुँचे। वहाँ उन्होंने आजाद हिन्द फौज (INA-Indian National Army) की कमान सम्भाली। यह सेना भारतीय सैनिकों और विदेशों में रहने वाले भारतीयों को मिलाकर बनाई गई थी, जिसका एकमात्र लक्ष्य था- भारत को आजाद कराना। उन्होंने सिंगापुर से ही दिल्ली को आजाद कराने का संकल्प लिया। यहीं पर उन्होंने अपना मशहूर नारा 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' दिया।

इस नारे ने देश के अन्दर और बाहर, लाखों लोगों को जोश से भर दिया। आजाद हिन्द फौज ने बहादुरी से लड़ाई लड़ी और भारत की सीमा, मणिपुर तक पहुँच गई थी। हालाँकि, युद्ध की परिस्थितियों के कारण उन्हें पीछे हटना पड़ा, लेकिन उनकी हिम्मत और उनका प्रयास हमेशा के लिए इतिहास में अमर हो गया। नेताजी का प्रभाव केवल उनकी सेना तक सीमित नहीं था। उनकी बहादुरी की खबर जब भारत में फैली, तो लाखों लोगों का आत्मविश्वास बढ़ गया। अंग्रेजी सरकार को भी यह समझ आ गया था कि अब भारतीय सैनिक और जनता आजादी के लिए कुछ भी कर सकते हैं।

हालाँकि १९४५ में एक विमान दुर्घटना में उनकी मौत की खबर आई, जिसकी गुत्थी आज भी पूरी तरह सुलझी नहीं है। लेकिन यह बात सच है कि नेताजी का त्याग और बलिदान कभी खत्म नहीं हो सकता। वह हमारे दिलों में हमेशा जीवित रहेंगे।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस सचमुच 'नेताजी' थे, जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी। उनका जीवन हमें सिखाता है कि साहस, त्याग और लक्ष्य के प्रति समर्पण ही सबसे बड़ी शक्ति है।

आइये, हम सब उनकी जयन्ती पर यह संकल्प लें कि हम अपने देश को मजबूत, खुशहाल और आत्मनिर्भर बनाने के लिए कड़ी मेहनत करेंगे। यही नेताजी को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

- सिद्धम आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

लोकार्पण– "राष्ट्र मन्दिर" अमर हुतात्माओं को समर्पित (SILICON MUSEUM OF INDIA)

जो भी सज्जन उदयपुर 22 एवं 23 फरवरी 2026 में हो रहे महोत्सव में आना चाह रहे हैं उनकी सुविधा के लिए उदयपुर आने वाली एवं उदयपुर से जाने वाली ट्रेन–सारणी दी जा रही है। आपसे निवेदन है कि यथाशीघ्र अपना रिजर्वेशन करा ऋषि की कर्मस्थली पर हो रहे इस भव्य लोकार्पण में आने का मानस बना, हमें सूचित करें।

Scan the QR code to Register

ट्रेन नं.	प्रस्थान	आगमन	कहाँ से	कहाँ तक	ट्रेन नाम	प्रस्थान का दिन
12992	14:10	21:50	JAIPUR	UDAIPUR	INTERCITY	DAILY
12963	18:25	7:20	HAZ. NIZAMUDDIN	UDAIPUR	MEWAR	DAILY
19965	9:25	6:55	KHUJARAHO	UDAIPUR	KURJHO	DAILY
19610	17:55	15:30	YOG NAGRI RISHIKISH	UDAIPUR	HARIDWAR	SUN, TUE, FRI
19602	8:30	4:00	NEW JALPIGUDI	UDAIPUR	NEW JALPIGUDI	MONDAY
19616	18:30	00:25	KAMAKHYA	UDAIPUR	KAVIGURU	THRUSDAY
19670	00:15	8:05	PATLIPUTRA	UDAIPUR	HUMSAFAR	FRIDAY
19315	18:20	4:20	INDORE	UDAIPUR	INDORE	DAILY
20980	15:45	21:08	JAIPUR	UDAIPUR	VANDE BHARAT	S,W, F
20982	15:00	23:45	AGRA	UDAIPUR	VANDE BHARAT	M, THU, SAT
12982	20:00	7:40	ASARWA	JAIPUR	JAIPUR ASAWARA	DAILY
19668	10:05	3:00	MAISUR	UDAIPUR	MAISUR	THRUSDAY
22986	16:45	4:00	DELHI SARAI ROHILA	UDAIPUR	HUMSAFAR	SUNDAY
20473	19:40	7:48	DELHI SARAI ROHILA	UDAIPUR	CHETAK	DAILY
12991	6:00	13:40	UDAIPUR	JAIPUR	INTERCITY	DAILY
12964	18:30	6:50	UDAIPUR	HAZ. NIZAMUDDIN	MEWAR	DAILY
19666	22:10	19:05	UDAIPUR	KHUJARAHO	KURJHO	DAILY
19609	13:45	10:20	UDAIPUR	YOG NAGRI RISHIKISH	HARIDWAR	M, THU, SAT
19601	00:45	18.35	UDAIPUR	NEW JALPIGUDI	NEW JALPIGUDI	SATARDAY
19615	16:05	00:10	UDAIPUR	KAMAKHYA	KAVIGURU	MONDAY
19669	12:50	20.15	UDAIPUR	PATLIPUTRA	HUMSAFAR	WEDNESDAY
19316	20:20	7:00	UDAIPUR	INDORE	INDORE	DAILY
20979	7:50	14:10	UDAIPUR	JAIPUR	VANDE BHARAT	S,W, F
20981	5:45	14:30	UDAIPUR	AGRA	VANDE BHARAT	M, TUE, SAT
12981	20:45	8:40	JAIPUR	ASARWA	JAIPUR ASAWARA	DAILY
19667	20:55	16:40	UDAIPUR	MAISUR	MAISUR	MONDAY
22985	00:45	11:25	UDAIPUR	DELHI SARAI ROHILA	HUMSAFAR	SUNDAY
20474	17:00	5:05	UDAIPUR	DELHI SARAI ROHILA	CHETAK	DAILY

महर्षि भरद्वाज कृत् 'बृहद् विमानशास्त्र' जर्मनी कैसे पहुँचा?

तैत्तिरीय ब्राह्मण में एक कथा आती है। महर्षि भरद्वाज ३०० वर्ष के हो गये, देवताओं के राजा इन्द्र ने उनसे पूछा- 'यदि आपको १०० वर्ष और जीने के लिए चौथी आयु दे दी जावे तो आप क्या करोगे?' भरद्वाज ने उत्तर दिया कि- 'मैं इस अगले जीवन में भी आजन्म ब्रह्मचारी रहकर वेदों का स्वाध्याय ही करूँगा।' इन्द्र ने उन्हें तीन बड़े अज्ञात पर्वत दिखाए और प्रत्येक से एक-एक मुट्ठी लेकर कहा- 'देखो, विशाल पर्वतों के समान ये वेद अनन्त हैं। आप तो ३०० वर्ष की आयु में थोड़ा सा ही पढ़ पाए हो, अधिकांश तो आपके लिए अज्ञात ही पड़ा है। आओ इन्हें पढ़ो और जानो।' मानव अल्पज्ञ है। भरद्वाज के समान ऋषि ३०० वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करके भी वेदों के पूर्ण ज्ञाता नहीं बन सके।

महर्षि भरद्वाज सारी आयु ब्रह्मचारी रहकर सब सत्य विद्याओं के पुस्तकों का अध्ययन-अध्यापन करके बहुत बड़े विद्वान् बने और उन्होंने एक ग्रन्थ **'यन्त्र सर्वस्व'** नाम का लिखा। उसका एक अध्याय 'वृहद विमान शास्त्र' है। इस विमानशास्त्र का भी लोप हो गया था। इस पुस्तक का एक पृष्ठ एक जर्मन विद्वान् को मिला। उस पृष्ठ को लेकर वह जर्मन विद्वान् भारत के सभी पुस्तकालयों में गया और इस ग्रन्थ की खोज की। किन्तु इस ग्रन्थ का कोई अता पता नहीं मिला! इस धुन के धनी जर्मन विद्वान् ने ब्राह्मणों (ब्रह्मवेत्ताओं) के घर में घूम-घूम कर इस पुस्तक की खोज आरम्भ कर दी। सौभाग्यवश इसको राजस्थान प्रदेश में एक विधवा ब्राह्मणी के घर में यह ग्रन्थ मिल गया। किन्तु इसमें एक वही पृष्ठ नहीं था जो इस जर्मन विद्वान् को वह पृष्ठ कहीं से मिला था। अपनी सफलता पर वह कृतकृत्य हो गया। इस ग्रन्थ को वह अपने देश जर्मनी में ले जाना चाहता था किन्तु उस ब्राह्मणी ने ग्रन्थ देने से सर्वथा निषेध कर दिया और कहा- यह ग्रन्थ हमारे घर से बाहर नहीं जा सकता। किन्तु यह जर्मन विद्वान् निराश और हताश नहीं हुआ। इसने उस विधवा ब्राह्मणी को अपनी धर्म बहन बनाया और अनेक वर्षों तक वह उस देवी की अनेक प्रकार से आर्थिक सहायता करता रहा। यथार्थ में वह उसका भाई ही बन गया! तीज- त्यौहार और पर्वों पर

जैसे कोई भाई अपनी बहन को वस्त्र आदि देकर धन की सहायता करता है निरन्तर यही कार्य उसने किया, बीच-बीच में अपनी इस धर्म बहन से मिलता भी रहा। विधवा ब्राह्मणी ने यह साक्षात् अनुभव किया कि यह सचमुच पिछले जन्म का सगा भाई ही है। अपने देश जर्मनी में लौटने से पहले इसने प्रचुर मात्रा में धन और आवश्यक वस्तुएँ अपनी इस बहन को दीं और बहन से प्रार्थना की कि- मैं अपने देश को लौट रहा हूँ! इस समय मुझे उस ग्रन्थ (बृहद्विमान शास्त्र) का फिर दर्शन कराओ। बहन ने पूछा- 'भाई! सत्य बताओ, इस ग्रन्थ के दर्शन करना ही चाहते हो या ले जाना चाहते हो?' बहन जी! इच्छा तो ले जाने की है, किन्तु आप देवेंगी नहीं। इसलिए कैसे ले जाऊँ! ब्राह्मणी ने कहा- वह समय बीत गया जब मैंने देने से निषेध किया था! अब तो आप मेरे धर्म भाई (सगे भाई से अधिक) बन गए हो। बहन की वस्तुओं पर भाई का अधिकार होता है। इसलिए यह ग्रन्थ अब आपका ही है। आपने अपनी इस बहन की इतनी अधिक सहायता या उपकार किया है, मेरे पास शब्द नहीं जिससे मैं आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट कर सकूँ और आपका धन्यवाद कर सकूँ। वह जर्मन विद्वान् इस ग्रन्थ को अपने देश जर्मनी में ले गया। वहाँ के वैज्ञानिक विद्वानों ने इस पर शोध कार्य किया। जब जर्मनी का बादशाह हिटलर रूस और अमरीका से लड़ता हुआ युद्ध में हार गया ,उसका यह भी पता न चला कि वह कहाँ गया तब रूस बदले की भावना से जर्मनी देश को सदा के लिए समाप्त करना चाहता था । किन्तु अमेरिका ने इसका विरोध किया और कहा कि जर्मनी देश समाप्त हो गया तो संसार से विज्ञान समाप्त हो जाएगा और नए वैज्ञानिक आविष्कार नहीं हो सकेंगे। दोनों देशों ने मिलकर निश्चय किया कि जर्मनी को दोनों आधा-आधा बाँट लें। सदा के लिए इनको अपने अधीन रखें।

सारे जर्मनी देश को दो भागों में बाँट दिया, पूर्वी जर्मनी रूस के अधीन हो गया और पश्चिम जर्मनी अमेरिका के अधीन हो गया। जर्मनी की राजधानी बर्लिन को भी दो भागों में बाँट दिया गया और बीच में से पक्की दीवार बना दी गई। मैं जिस समय जर्मनी गया तो दोनों जर्मनी के विभाजित विभाग देखे और इनको दो भागों में बाँटने वाली दीवार भी देखी। एक देश के दो देश बना दिए गए। बिना परमिट के जर्मनी का भी कोई व्यक्ति एक भाग से दूसरे भाग में नहीं जा सकता। इतना ही नहीं किया इन्होंने जर्मन देश के वैज्ञानिक, विद्वानों को भी बाँट लिया! उन विद्वानों ने इस ग्रन्थ "वृहद् विमान शास्त्र" पर शोध कार्य किया और ऐसे विमान रूप राकेट बनाए जिसमें बैठकर इन देशों के व्यक्ति चाँद तक पहुँच गए। (ध्यान रहे विभाजित जर्मनी पर अमेरिका और रूस के प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष व्यापक प्रभाव रहे) इस "वृहद् विमान शास्त्र" में विमानों का इतिहास भी लिखा है और ऐसे विचित्र विमानों की निर्माण विधि लिखी है जिनमें बैठकर चन्द्रमा आदि ग्रह-उपग्रहों में जाया जा सकता है। हमारे पूर्वज ऐसे विमानों के द्वारा ग्रह-उपग्रहों में प्राचीन काल में आते-जाते रहते थे।

ऐसी ही एक पुस्तक खोज करने पर बड़ौदा आदि स्थान पर किसी पुस्तकालय में मिल गई। उसका अनुवाद करने के लिए सार्वदेशिक सभा के पास वह पुस्तक आई। उसका अनुवाद स्वामी ब्रह्ममुनि विद्यामार्तण्ड ने किया और सार्वदेशिक सभा; नई दिल्ली ने प्रकाशित किया। उसकी ३०० प्रतियाँ अमेरिका वालों ने खरीदीं और इस पुस्तक का पहला संस्करण शीघ्र ही समाप्त हो गया। सभा के अधिकारियों से कह कर इसका दूसरा संस्करण छपवाया गया और इसका मूल्य भी बहुत थोड़ा रुपये२० रखा, मैंने भी प्रचारार्थ इसकी १०० प्रतियाँ खरीदीं। यह महर्षि भरद्वाज जी की अमर कृति है वा अमर सन्तान है। ऋषियों के शिष्य वा ग्रन्थ ही उनके सन्तान होते हैं। सभी ऋषि प्रायः करके ब्रह्मचारी हुआ करते थे। महाभाष्यकार महर्षि पतंजलि लिखते

हैं- **अष्टाशीति सहस्त्राण्यूर्ध्वरितसामृषीणां बभूवुस्तत्रागस्त्याष्टर्मैऋषिभि: प्रजनोभ्युपगत:।**
तत्रभवतआं यदूपत्यं तानिगोत्राणि, अतोन्ये गोत्रावयवा: !!

अर्थात् अट्ठासी हजार उर्ध्वरेता ब्रह्मचारी ऋषि हुए हैं। उनमें से केवल आठ ऋषियों ने ही विवाह करके सन्तानोत्पत्ति की थी। उन्हीं ऋषियों के नाम पर गोत्र चले। शेष गोत्र उनके पौत्र, प्रपौत्र आदि के द्वारा चले। वे आठ ऋषि थे- अत्रि, जमदग्नि, गौतम, भरद्वाज, कश्यप, वशिष्ठ, विश्वामित्र और अगस्त्य। यह भारत ऋषि-महर्षि और देवताओं का ही देश है। सारे संसार के लोग विद्या पढ़ने के लिए और चरित्र सदाचार की शिक्षा लेने के लिए प्राचीन काल में यहाँ आते थे। एक अरब ८५ करोड़ से अधिक वर्षों तक यह आर्यावर्त्त देश सारे संसार का गुरु रहा है।

भगवान मनु के पुत्र इक्ष्वाकु से लेकर युधिष्ठिर पर्यंत सारे संसार में भारत का चक्रवर्ती राज्य रहा है। राजा और प्रजा सभी वैदिक धर्म और यहाँ के ऋषि-महर्षि देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए सदैव जाते रहते थे। मनु जी महाराज आदि सृष्टि में हुए हैं! वह मनुस्मृति में लिखते हैं-

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन:।
स्वं-स्वं चरित्रों शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा:।।

- मनु. १/१९

आर्यावर्त्त के ब्राह्मणों (ब्रह्मवादियों) से विश्व भर के मनुष्य सदाचार की शिक्षा प्राप्त करें ! प्राचीन आर्य ऋषि अपनी वैदिक शिक्षा, विद्या- सदाचार से संसार की समस्त जातियों को अपना शिष्य बना कर उनको कृतकृत्य करते थे।

स्रोत - वैदिक देवता
लेखक- स्वामी ओमानन्द सरस्वती
प्रस्तुतकर्त्ता- रामयतन

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।
आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!
इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।
आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।
वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रुप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।
हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे।
निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

स्वास्थ्य

प्रतिश्याय

प्रतिश्याय एक बहुप्रचलित व्याधि है। इसको सर्दी जुकाम आदि नाम से भी जाना जाता है। यह वात एवं कफ दोष प्रधान रोग है। आजकल यह रोग बार-बार होते देखा जाता है। वर्तमान काल की विकृत जीवन शैली, अनियमित दिनचर्या, व्यायाम का अभाव, ऋतुचर्या का पालन न करना और प्रदूषित वातावरण इसके मुख्य कारण हैं। कुछ गरिष्ठ भोजन कर लिया, थोड़ी ठंडी हवा लग गई, मौसम परिवर्तन हो गया, थोड़ी धूल मिट्टी एवं धुएँ में जाना हुआ, ठण्डा पानी पीया या ठण्डा भोजन किया कि सर्दी जुकाम हो जाता है। ऐलौपैथी की दवा लेने पर कुछ आराम होता है लेकिन वह बार-बार होता रहता है। जब यह रोग पुराना हो जाय और बार-बार होने लगे तो इसे जीर्ण प्रतिश्याय था दुष्ट प्रतिश्याय कहते हैं। आइये इसके कारणों को समझने का प्रयास करते हैं।

प्रतिश्याय के निदानों को दो भागों में विभक्त किया गया है।

1. सद्यः प्रतिश्याय कर- जिन कारणों से तुरन्त प्रतिश्याय हो जाय उनको सद्यः प्रतिश्याय कर कहते हैं। जैसे पुरानी धूल मिट्टी के सम्पर्क में आना, शीतल पदार्थों का सेवन, सर्दी लगना, ठण्डे पानी में भींगना आदि कारणों से तुरन्त प्रतिश्याय हो जाता है।

2. चयादि क्रमजन्य प्रतिश्याय कर- जब वात-पित्त-कफ आदि दोष अपने निदानों के सेवन से धीरे-धीरे संचित होकर शरीर में प्रकुपित होकर प्रसर करते हुए प्राणवह स्रोतस व श्वसन संस्थान में स्थान सश्रय कर प्रतिश्याय को उत्पन्न करते हैं उसे चयादिक्रम जन्य प्रतिश्याय कहते हैं।

चरक के अनुसार प्रतिश्याय के निदान

१. पुषार सेवन २. वायु सेवन ३. स्थान परिवर्तन ४. रात्रि जागरण ५. शीतल जलपान ६. अजीर्ण ७. ऋतुवैषम्य ८. अजीर्णावस्था में स्नान ९. भोजन के बाद अतिद्रवसेवन १०. गुरु-लघु-शीत पदार्थों का अति सेवन ११. रूक्ष पदार्थों का अति सेवन १२. अवगाहन १३. मंदाग्नि १४. विषमाशन १५. विबन्ध १६. नारी प्रसंग १७. अभिताय १८. धूम, रज, शीत व वेग धारण।

सुश्रुतोक्त प्रतिश्यायकर निदान

१. नारी प्रसंग २. अभिघात ३. धूम ४. रज ५. शीत ६. वेगावरोध।

अष्टांगहृदय में प्रतिश्याय के निदान

१. धूम २. रज ३. अतिस्वप्न ४. बहुत देर तक

सिर को काफी नीचे झुकाकर चलना ५. अत्यम्बुपान ६. अति मैथुन ७. वमन के गैंग को रोकने से ८. अश्रु के वेग को रोकने से।

उपरोक्त कारणों के अलावा अति मधुर पदार्थ लेने से, घी, तैल, मिष्ठान्न, दही व तले पदार्थों के अति सेवन से, ठण्डा आहार लेने से, एअर कण्डीशनर में रहने से, फ्रीज में रखे पदार्थों के सेवन से, बर्फ, आइसक्रीम आदि के अति सेवन से, स्निग्ध आहार लेने के पश्चात् ठण्डा पानी पीने से भी प्रतिश्याय हो जाता है।

उपरोक्त प्रतिश्याय के निदानों से अग्निमांद्य होकर भोजन का सम्यक् पाचन न होने से आमदोष की उत्पत्ति होती है। यह आमदोष रस व रक्त को दूषित कर कफवृद्धि करता है और यह कफ प्राणवह स्रोतस एवं नासामूल में संचित होकर नासिका द्वारा बाहर निकलता है, इसी को प्रतिश्याय कहते हैं। उचित उपचार न कराने से जब दीर्घकाल तक प्रतिश्याय रहता है तो नासिका की अन्दर की दीवार में सूजन आ जाती है, बाद में उसमें व्रणोत्पत्ति हो जाती है तब उसे सायनोसायटिस (सामनस) कहते हैं। इसी को दुष्ट प्रतिश्याय भी कहते हैं। लंबे समय तक रोग रहने पर इससे श्वास-कास व क्षय रोग भी हो जाता है अतः इसका समय पर उचित उपचार करना आवश्यक है।

चिकित्सा

सर्वप्रथम प्रतिश्याय के कारण को समझकर उसको छोड़ना अत्यावश्यक है। पथ्यापथ्य का पालन किये बिना प्रतिश्याय का स्थायी उपचार सम्भव नहीं है।

प्रतिश्याय में अपथ्य- कफवर्धक पदार्थों का सेवन नहीं करें। शीत, मधु, गुरु पदार्थ नहीं लेने चाहिए। दिन में सोना, रात्रि जागरण, अति मैथुन, ठण्डी हवा का सेवन, यात्रा, विषम आहार अपथ्य है।

पथ्य- हल्का गर्म भोजन, सौंठ, अदरक, काली मिर्च, तुलसी, लौकी, तुरई, बैगन, हल्दी, मेथी दाना, लहसुन आदि का सेवन करना चाहिए। सौंठ मिलाकर गर्म किया पानी पीना चाहिए, इससे संचित कफ पिघलकर बाहर निकल जाता है और स्रोतावरोध दूर होता है।

औषधि चिकित्सा-

- त्रिभुवन कीर्ति रस १२५ मि.ग्रा. तुलसी पत्र में रखकर दिन में तीन बार खावें।
- अग्नि तुण्डीवटी १ गोली संजीवनी बटी २ गोली ऐसी एक-एक मात्रा दिन में तीन बार गर्म पानी से लेवें।
- सितोपलादि चूर्ण २ ग्राम, त्र्यूषणा चूर्ण २५० मि. ग्रा., टंकण भस्म २५० मि. ग्रा., लक्ष्मी विलास रस २५० मि.ग्रा., श्रृंग भस्म २५० मि. ग्रा., मुलेठी १ ग्राम, आयोग्य वर्धिनी २ गोली। इन सबको मिलाकर एक मात्रा बनायें। ऐसी एक-एक मात्रा दिन में तीन बार शहद से लेवें। इससे बहुत अच्छा लाभ होता है।
- षड्बिन्दू तैल- दोनो नासिकाओं में ६-६ बूँद प्रातः सायं डालें।
- च्यवन प्राश १ चम्मच, अभ्रक भस्म शतपुटी २५० मि. ग्रा., चौसट प्रहरीपीपल २५० मि.ग्रा, प्रवाल भस्म २५० मि. ग्रा., मल्लसिन्दूर १०० मि. ग्रा., सौंठ चूर्ण १ ग्राम। इन सबको मिलाकर १ मात्रा बनावें, ऐसी एक-एक मात्रा प्रातः-सायं खाकर ऊपर से गोजिह्वादि काढ़ा ३० मि.ली. पीवें। इसके निरन्तर सेवन से जीर्ण प्रतिश्याय में भी बहुत अच्छा लाभ होता है व रोगी की रोग प्रतिकार शक्ति भी बहुत बढ़ जाती है। इससे पुरानी खांसी एवं श्वास में भी अच्छा लाभ होता है।

वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त आयुर्वेद चिकित्साधिकारी
१३- श्रीराम नगर, हिरणमगरी सेक्टर- ६
उदयपुर (राज.)

कहानी दयानन्द की

गतांक से आगे .....

कथा सरित

मुम्बई में भी अपने व्याख्यानों में स्वामी जी ने आर्यों के स्वर्णिम इतिहास का वर्णन किया। एक व्याख्यान में उन्होंने कहा कि पाँच या साढे पाँच सहस्र वर्ष पूर्व आर्य जाति अत्यन्त उन्नत दशा में थी। उसका विज्ञान विस्तृत था और उसमें सत्कर्म और धार्मिकता का प्राबल्य था। आर्य जाति की अधोगति का कारण शासक वर्ग की मूर्खता थी। महाभारत के समय में इन्हीं के कर्म से अवनति को यह भारतवर्ष प्राप्त हुआ।

स्वामी जी ने यहीं पर ऋग्वेद के पहले सूक्त का भाष्य, जिसमें गुजराती और मराठी भाषा में भी अनुवाद था, वेद भाष्य नमूने के तौर पर प्रकाशित किया और इसे उन्होंने काशी के पण्डित बाल शास्त्री, स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती और कोलकाता के अन्य पण्डितों के पास भी भेजा। ताकि उनकी भाष्य शैली पर विद्वानों के विचार जाने जा सकें।

अभी तक स्वामी जी की प्रसिद्धि यूरोप में भी पहुँच गई थी। जुलाई १८७५ में एक व्यक्ति ने लिप् जेंग से लिखा कि पण्डित दयानन्द सरीखा मनुष्य ही यूरोप के लोगों में यह विचार उत्पन्न कर सकता है कि हमारी भूमि की नैसर्गिक शक्तियाँ बिना किसी यूरोपियन प्रभाव के कैसे विस्तृत तार्किक बुद्धि और गंभीर विद्वता रखने वाले पुरुषों को उत्पन्न कर सकती है।

स्वामी दयानन्द की सोच की गहराई उनके सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों के समक्ष अनेक बार स्पष्ट होकर उनको चकित कर देती थी। रामदास छबीलदास जो स्वामी जी से वैशेषिक सूत्र आदि पढ़ा करते थे उनके अनुसार स्वामी जी ने एक बार कहा कि भारत का बहुत सा धन विलायत जाता है परन्तु यह बंदूक की गोली के समान कार्य करेगा क्योंकि जितना धन जाएगा अंग्रेज उतने ही आलसी और भोगी विलासप्रिय होकर अपदस्थ होंगे। धन की गति को लेकर कितना गम्भीर विचार यहाँ स्वामी जी ने प्रस्तुत किया कि धन की प्रचुरता पुरुषार्थ से परे कर देती है और व्यक्ति अगर सचेत न हो तो उसे पतन के मार्ग की ओर अग्रसर कर देती है।

मुम्बई के पश्चात् स्वामी जी ने गुजरात प्रान्त में जाने का निश्चय किया और वे सूरत पहुँचे। क्या ही विडंबना है कि जिस व्यक्ति की ख्याति देश-देशान्तर में फैल रही हो, मुम्बई में अनेक बड़े-बड़े लोग जिनके सान्निध्य में रहकर अपने आपको उनका शिष्य कहा कर गर्वोन्नत अनुभव कर रहे हों उनके अपने प्रान्त में, सूरत में, ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। स्वामी जी जहाँ गए उनका भव्य स्वागत हुआ परन्तु सूरत में स्वामी जी को कई दिन खिचड़ी पर ही निर्वाह करना पड़ा जो कि पण्डित कृष्ण राम इच्छा राम बाजार से खरीद कर लाते थे, परन्तु स्वामी जी ने किसी भी दर्शक पर, श्रोता पर यह बात प्रकट न करी।

पण्डित दुर्गा राम सूरत में बड़े सुधारक माने जाते थे। वे देश प्रेमी, कुरीतियों के घोर प्रतिवादी और देसी शिल्प के पक्षपाती थे। उन्हें लोग सूरत का लूथर कहते थे। उनका सहयोग अवश्य मिला। स्वामी जी ने अपने स्वभाव के अनुसार सत्य का प्रकाशन करते हुए गुजरात की धरती पर जन्मे सहजानन्द के मत की आलोचना

करना प्रारम्भ कर दिया। कुछ लोगों को यह अच्छा नहीं लगा। उनके अन्दर ही अन्दर प्रयत्न चलते रहे कि स्वामी जी के व्याख्यान ना होने दिए जाएँ और यही हुआ। चौथा व्याख्यान रघुनाथ पुरी के सेठ ठाकुर भाई चुन्नीलाल के यहाँ होना था। परन्तु वह मकान बन्द मिला। श्रोताओं ने उस मकान को खुलवाने का बहुत

प्रयत्न किया परन्तु वह न (खुला) तो स्वामी जी वहीं एक कुर्सी मंगाकर बैठ गए और श्रोतागण नीचे जमीन पर धूप में बैठ गए और व्याख्यान का यह कार्यक्रम चलता रहा। यहीं पर गुजरात में प्रतिष्ठित मोहन बाबा ब्रह्मचारी स्वामी जी से मिलने आए और उन्हें अपने आश्रम पर आमंत्रित किया। उन्होंने स्वामी जी का बहुत स्वागत सत्कार किया। परन्तु उन बाबा जी के बहुत सारी चेलियाँ थीं जिन्हें उन्होंने दूसरे कमरे में बिठा रखा था। मोहन बाबा ब्रह्मचारी ने स्वामी जी से बहुत निवेदन किया कि वे उन स्त्रियों को दर्शन दें, स्वामी जी ने बिल्कुल मना कर दिया। परन्तु अनेक बार आग्रह करने पर दर्शन मात्र देकर के वहाँ से चले आए। चरण स्पर्श का पूर्णतः निषेध कर दिया। स्वामी जी की एक सभा में धुंधलका होने पर कुछ ईंटें फेंकी गईं। उसके बाद वहाँ के डिप्टी कलेक्टर जगजीवन दास ने दो पुलिस कांस्टेबलों को स्वामी जी की रक्षा के लिए नियुक्त कर दिया।

यहाँ गुजरात मित्र नाम के पत्र के सम्पादक स्वामी जी के घोर विरोधी हो गए थे और उन्होंने अपने पत्र के माध्यम से स्वामी जी पर बहुत से आक्षेप किए और एक प्रकार से वहाँ के शासन-प्रशासन के लोगों को भड़काने का प्रयास किया कि वह स्वामी जी के व्याख्यान न होने दें। पर स्वामी जी पर इन सब से कोई फर्क नहीं पड़ता था। वह किसी भी सूरत में सत्य प्रकाशित करने से पीछे नहीं हटते थे। यहीं सूरत में ही उन्होंने स्वामीनारायण मत खण्डन पर पुस्तक लिखी। यह उनकी निर्भिकता का परिचायक था।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य, नवलखा महल, उदयपुर

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत, श्री रामजीवन मिश्र; जयपुर, श्रीमती ममता आर्या; नई दिल्ली, श्री यश आर्य; कोलकाता, श्रीमती संचिता जैन; उदयपुर, श्रीमती कुसुम गुप्ता; सूरत, डॉ. बी.पी. भटनागर; उदयपुर, डॉ. अवन्त कुमार सचेती; उदयपुर, श्री अरुण अब्रोल; मुम्बई

समाचार

ऐतिहासिक जीत : 6 दिसम्बर 2025 असत्य पर सत्य की जीत

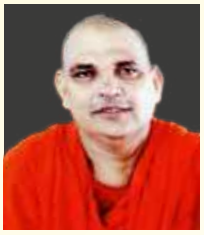

बहुत लम्बे संघर्ष के बाद वेद मन्दिर; मथुरा गुरुकुल के अधिष्ठाता, गुरु विरजानन्द ट्रस्ट के अध्यक्ष, गुरुकुल वृन्दावन के कुलाधिपति, महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, व्याकरण के आचार्य, वेदानुरागी पूज्य आचार्य स्वदेश जी महाराज आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के प्रधान बने। पूज्य आचार्य जी एवं सभी सहयोगियों, ऋषि मिशन में लगे सभी समर्पित बन्धुओं को हार्दिक शुभकामनाएँ।

– अशोक आर्य, उदयपुर

विशाल महायज्ञ एवं भव्य महासम्मेलन का आयोजन

स्वामी आत्मानन्द वैदिक गुरुकुल, मलारना चौड़ सवाई माधोपुर के तत्वावधान में अमर बलिदानी हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के सौ वें बलिदान वर्ष के पावन अवसर पर ३१ मन घी एवं ३१ मन श्रेष्ठ सामग्री से विशाल महायज्ञ एवं भव्य महासम्मेलन का आयोजन ५ फरवरी से ८ फरवरी २०२६ (गुरुवार से रविवार) तक किया जाएगा। आयोजन समिति के अनुसार महायज्ञ के यज्ञ-ब्रह्मा आचार्य सोमदेव आर्य रहेंगे। इस चार दिवसीय आयोजन में वैदिक अनुष्ठान, प्रवचन, धर्मसभा एवं राष्ट्र-संस्कृति से जुड़े विविध कार्यक्रम आयोजित होंगे। ५ फरवरी २०२६ को प्रातः १० बजे विशाल शोभायात्रा निकाली जाएगी तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा भव्य व्यायाम प्रदर्शन प्रस्तुत किया जाएगा। इस महायज्ञ में प्रमुख अतिथि के रूप में महाशय राजीव गुलाटी जी (डायरेक्टर-MDH), श्रीमान सज्जन सिंह कोठारी (पूर्व लोकायुक्त, राजस्थान), महात्मा जितेन्द्र भाटिया जी (दिल्ली), ठाकुर विक्रम सिंह जी (दिल्ली), श्रीमान् गोविन्दराम चौधरी (अनमोल इंडस्ट्रीज, नोएडा), श्रीमान् सुभाष नुवाल (निर्वाण स्मारक, अजमेर), श्रीमान् मुकेश आर्य (रोहतक), श्रीमान् अश्वनी त्यागी (माछरा, कठोर विधानसभा क्षेत्र), श्रीमान् चन्द्रभद्र सिंह (सुल्तानपुर गौरव), श्रीमान् यशभद्र सिंह (इशोली विधानसभा गौरव), श्रीमान् प्रकाश जी (मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा), श्रीमान् मा. रामपाल जी पूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, श्रीमान् वेदप्रकाश जी (डिप्टी कलेक्टर, दिल्ली पुलिस), श्रीमान् अशोक आर्य (अध्यक्ष-सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर), श्रीमान् राजकुमार जी (बैंगलोर), श्रीमान् शिवकुमार अग्रवाल जी (दिल्ली), श्रीमान् ओमप्रकाश आर्य (बस्ती, उत्तर प्रदेश), श्रीमान् ईश्वर आर्य, श्रीमान् पंडित मदनमोहन जी (गंगापुर सिटी) सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रहेगी। महायज्ञ में आमंत्रित विद्वानों एवं सन्तों में स्वामी सत्येन्द्र परिव्राजक (रोजड़, गुजरात), स्वामी सच्चिदानन्द जी (राजस्थान), स्वामी धुर्वानन्द जी (गोरड़, हरियाणा), स्वामी हंसानन्द जी (नारनोल), डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री (अमेठी), पद्मश्री आचार्या सुकामा जी (गुरुकुल; रुड़की), आचार्य विजयपाल जी (गुरुकुल झज्जर), आचार्य कर्मवीर जी (रोजड़, गुजरात), आचार्य रविशंकर जी (बयाना, भरतपुर), आचार्य वेदनिष्ठ जी (ओडिशा), आचार्य धीरेन्द्र पाण्डेय जी (जबलपुर), आचार्य भवदेव जी (अजमेर), डॉ. रमेश मुनि (गुरुकुल मलारना चौड़), आचार्य जीववर्धन जी (जयपुर), डॉ. रमेश चन्द्र वावा (पंचकूला), महाशय सहदेव बेधड़क (बागपत), भजनोपदेशक पं. नरेशदत्त जी (बिजनौर), पं. भानुप्रकाश शास्त्री (बरेली), पं. कैलाशकर्मठ (कोलकाता) एवं पं. जगत वर्मा (पंजाब), कार्यक्रम में प्रसिद्ध यूट्यूबर श्रीमान् राहुल आर्य और श्रीमती डॉ. आयुषी राणा दिल्ली शामिल रहेंगे। आयोजन समिति के अनुसार इस महायज्ञ में देश-प्रदेश से बड़ी संख्या में सन्त, विद्वान्, समाजसेवी एवं श्रद्धालु भाग लेंगे। यह आयोजन राष्ट्र, समाज एवं मानव कल्याण की भावना से प्रेरित होकर किया जा रहा है। गुरुकुल सेवा समिति एवं समस्त ग्रामवासी मलारना चौड़ द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में सभी धर्मप्रेमी बन्धुओं को सपरिवार आमंत्रित किया गया है। सम्पर्क सूत्रः ९०२४६६६५५५

आर्यवीर-वीरांगना आत्मरक्षा एवं चरित्र निर्माण प्रशिक्षण

'मन की उड़ान संस्थान' एवं 'माँ शारदा आर्य समिति' (उदयपुर) के तत्वावधान में चार दिवसीय (८ दिसम्बर से ११ दिसम्बर) आर्यवीर-वीरांगना आत्मरक्षा एवं चरित्र निर्माण प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया गया। इसमें डूंगरपुर के विभिन्न विद्यालयों एवं

महाविद्यालयों के विद्यार्थियों और कर्मचारियों ने भाग लिया।

समापन समारोह पर 'माँ शारदा आर्य समिति' की संरक्षिका श्रीमती सरला गुप्ता ने यज्ञ कराया एवं यज्ञ और वैदिक संस्कारों के महत्व को भी समझाया। उगंता यादव एवं उर्वशी शर्मा ने तलवार और योग चाप का प्रशिक्षण दिया। फतहनगर से पधारे शिक्षक दिनेश आर्य द्वारा चार दिन तक सभी विद्यार्थियों को अस्त्र-शस्त्र, योगासन, ध्यान, आत्मरक्षा, संगीतमय व्यायाम, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणात्मक चर्चा द्वारा पथ-प्रदर्शन किया गया।

समापन समारोह पर 'तपस आश्रम' के मूक-बधिर बच्चों ने भी इस अवसर का लाभ उठाया। संस्थापिका कामना चौबिसा ने बताया कि यह संस्थान गत २५ वर्षों से सेवाएँ दे रहा है। वर्तमान में यहाँ २०० मूक-बधिर बच्चों का पालन-पोषण किया जाता है।

शोक संवेदना

अत्यन्त दुःख का समाचार है कि आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉक्टर महावीर मीमांसक जी की धर्मपत्नी श्रीमती विमलेश कुमारी का हृदयावरोध के कारण दिनांक ३ दिसम्बर २०२५ को देहावसान हो गया। आयु के चतुर्थ भाग में यह वियोग और अधिक कष्ट की अनुभूति कराता है। परन्तु विधाता के इस अटल नियम के समक्ष कुछ किया भी नहीं जा सकता। परमपिता परमेश्वर से यही प्रार्थना है कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करे एवं परिवारीजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति व सामर्थ्य प्रदान करे। न्यास और सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

देवताओं को भी सोने दो

एक भजन या गीत आपने निश्चित सुना होगा-

'अजब हैरान हूँ भगवान तुम्हें कैसे रिझाऊँ मैं।
कोई वस्तु नहीं है ऐसी जिसे सेवा में लाऊँ मैं।।'

इसी में आगे कहा है-

'तुम ही हो मूर्ति में भी तुम ही व्यापक हो फूलों में,
भला भगवान को भगवान पर कैसे चढ़ाऊ मैं।
लगाना भोग कुछ तुमको यह एक अपमान करना है,
खिलाता है जो सब जग को उसे कैसे खिलाऊँ मैं।
तुम्हारी ज्योत से रोशन हैं सूरज चाँद अरु तारे,
बड़ा अँधेर है तुमको अगर दीपक दिखाऊँ मैं।।'.....

तो इस भजन में परमपिता परमेश्वर के स्वरूप को बड़ी सरलता के साथ स्थापित कर दिया है। और उन सब प्रक्रियाओं को जिन्हें आप देखते हैं और सुनते हैं कि मन्दिर में देवताओं को कूलर लगाया जाता है क्योंकि देवता को गर्मी लग रही है, फिर रजाई ओढाई जाती है क्योंकि अब सर्दी आ गई है, अब देवताओं को सर्दी लग रही है। इसी प्रकार से उन्हें खाना खिलाया जाता है पानी पिलाया जाता है और उनके विश्राम का भी पूरा-पूरा प्रबन्ध किया जाता है। जाहिर है कि इस सब पर एक तर्कशील मस्तिष्क की क्या प्रतिक्रिया होगी।

परन्तु अभी एक बड़ा दिलचस्प मुकदमा सुप्रीम कोर्ट में आया। यह मुकदमा किया बांके बिहारी मन्दिर के पुजारियो ने क्योंकि वहाँ की जो प्रशासनिक व्यवस्था थी उसने वहाँ के पूजा-पाठ के समय को बदला। हो सकता है यह उन्होंने दर्शकों की सुविधा के अनुसार अथवा उनकी संख्या को नियमित करने की नीयत से किया हो। परन्तु पुजारियों का कहना था इससे देवता के विश्राम के समय में विघ्न पड़ेगा। सारी प्रक्रिया जो निर्धारित है उसी प्रकार होनी आवश्यक है। जब पुजारियों का यह आवेदन भारत के सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष आया तो मुख्य न्यायाधीश माननीय न्यायमूर्ति सूर्यकान्त जी की तीन सदस्य पीठ ने इस मामले की सुनवाई की। एक दिलचस्प टिप्पणी मुख्य न्यायाधीश महोदय ने की और वह विशेष रूप से उन वीआईपी लोगों को दिए जा रहे विशेष अधिकार को लेकर के थी जिसके अन्तर्गत दर्शन के समय के उपरान्त भी इन लोगों से पैसे लेकर अथवा इनको सन्तुष्ट करने के लिए दर्शन सुविधा दी जाती थी।

मुख्य न्यायाधीश महोदय का कहना है कि आप भगवान को विश्राम भी नहीं करने दोगे क्या? यह बहुत गलत है। जो भगवान के विश्राम करने के समय है उसमें कोई विघ्न नहीं होना चाहिए।

सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी में निम्न तीन बिन्दु महत्वपूर्ण है-

"दोपहर के १२ बजे मन्दिर बन्द करने के बाद भी भगवान को एक मिनट का विश्राम तक नहीं दिया जा रहा।"

"यह वही समय है जब देवता सबसे अधिक 'शोषित' होते हैं।"

"कुछ प्रभावशाली लोग जो मोटा पैसा दे सकते हैं, उन्हें पवित्र समय में विशेष पूजा और दर्शन की अनुमति मिल जाती है।"

आस्था का जो सैलाब इन दिनों विशेष रूप से उमड़ रहा है उस पर हम कोई टिप्पणी नहीं करना चाहते परन्तु निश्चित रूप से भारत के सर्वोच्च न्यायाधीश को सर्वाधिक योग्य विद्वान् मनीषी चिन्तक और तर्कशील मस्तिष्क का स्वामी माना ही जाएगा और वहाँ से इस प्रकार की टिप्पणी भगवान के तथा उनके विश्राम के सम्बन्ध में चिन्त्य तो अवश्य है।

।।ओ३म्।।

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव–2026

22 एवं 23 फरवरी

प्रस्तावित कार्यक्रम

22 फरवरी- 2026 रविवार

प्रातः कालीन सत्र – प्रातः 8.00 से 1.30 **राष्ट्र–मन्दिर– लोकार्पण**

महामहिम गुलाबचन्द कटारिया (राज्यपाल पंजाब एवं प्रशासक चण्डीगढ़)

एवं माननीय राजीव गुलाटी जी (निदेशक MDH)

सायं कालीन सत्र – सायं 4.30 से 7.30 **एक शाम–महर्षि दयानन्द के नाम**

दिनांक 23 फरवरी 2026 सोमवार

प्रातः कालीन सत्र – प्रातः 8.00 से 1.30

महर्षि दयानन्द और राष्ट्रवाद एक विमर्श, सम्मान एवं समापन समारोह

निवेदक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास; नवलखा महल; गुलाब बाग, उदयपुर

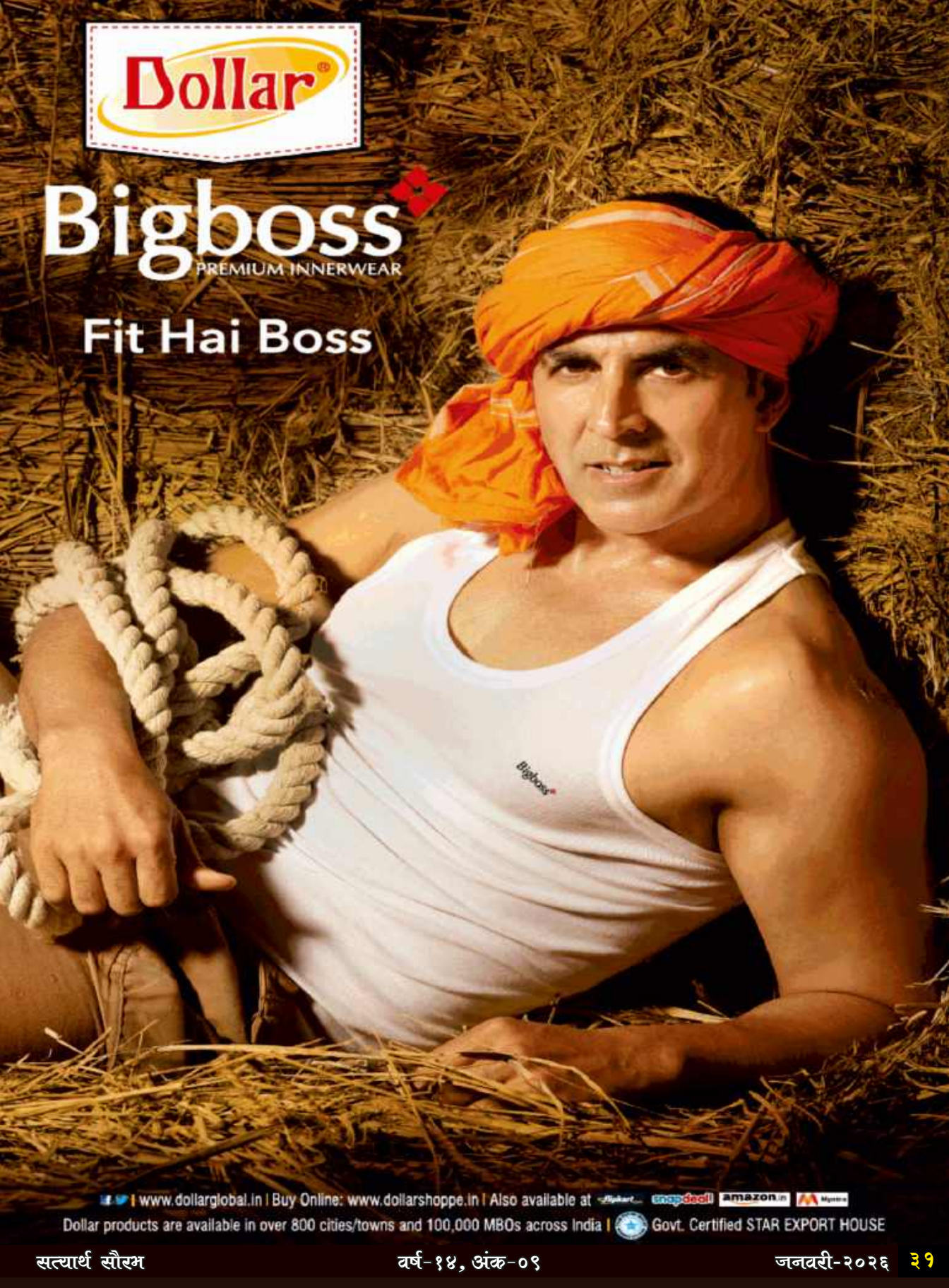
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
| www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India |
Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 January-2026 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2025-2027

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर